राज
कॉमिक्स
By संजयगुप्ता
संख्या : 10
नाग ग्रंथ
शृंखला खण्ड-2
नितिन मिश्रा
हेमंत कुमार
भक्त रंजन
नागपर्व
नागराज

आभार पत्र

राज कॉमिक्स के प्रिय पाठक मित्रों, प्रणाम!

राज कॉमिक्स बाय संजय गुप्ता में भेड़िया सीरीज की दूसरी कॉमिक्स आप सभी कोबी–भेड़िया प्रेमियों को समर्पित करता हूँ! इससे पूर्व प्रकाशित नागराज की कॉमिक्स आदिपर्व, नागप्रलय, ध्रुव की ट्रैप, भेड़िया की दोषपूर्ण, डोगा की कचरा पेटी, मेरी सोनू, बांकेलाल व अश्वराज की आबुरा का तिलिस्म एवं हास्य हिंडोला सीरीज की किसने झापड़ मारा ध्रुव को को सफल बनाने के लिए आप सभी का हार्दिक आभार। पूर्व वर्ष 2021 युगारंभ वर्ष में हम सात नयी कॉमिक्स प्रकाशित कर पाए और वर्ष 2022 के प्रथम चरण में हमने तीन नयी कॉमिक्स का प्रकाशन किया। इस वर्ष और ज्यादा कॉमिक्स का प्रकाशन करने के लिए हम प्रयासरत रहेंगे। इसी कार्यक्रम के तहत आगामी कॉमिक्स होगी नागराज और तौसी की प्रलय का देवता श्रृंखला की नागप्रलोप। यह कॉमिक्स आप तक जल्द ही पहुंचेगी।

जैसा कि आदिपर्व से पाठकों को अंदाज़ा लग गया होगा कि `नागग्रंथ श्रृंखला' नरकनाशक नागराज के जीवन उद्गम अन्वेषण के साथ–साथ एक सम्पूर्ण `प्रत्यावर्ती ब्रह्मांड' यानी (**Alternate Universe**) और उस ब्रह्मांड में बसने वाले किरदारों की सृजन प्रक्रिया का लेखा–जोखा है जो नागपर्व में `शो–स्टॉपर ध्रुव' और `क्रोधकेतु कोबी' के साथ आगे बढ़ेगा। इसके साथ ही इस ब्रह्मांड का सबसे रहस्यमयी और शक्तिशाली किरदार `अंतहीन ऐन्थनी गोन्साल्वेज़' भी शानदार तरीके से पदार्पण कर रहा है। इन सभी किरदारों के महज़ किरदारों से उत्कृष्ट नायक और नायक से महानायक बनने का वर्णन कभी आपको दांतों तले उँगली दबाने, कभी भावावेश में आँखों से छलक आए अश्रु जल को सम्भालने पर मजबूर कर देगा। यह मेरा वादा है आपसे। नायकों के साथ–साथ इस प्रत्यावर्ती ब्रह्मांड के खलनायक भी पाठकों को रोमांचित और आश्चर्यचकित करने में किसी से पीछे नहीं हैं। कौटिल्य नागमणी के जलवों का रसास्वादन तो पाठकगण कर ही चुके हैं अब इस सूची में देखिए अगला क्रम किसका है। इन किरदारों की उत्पत्ति और उद्भव से जुड़े सभी सवालों के अलावा और भी बहुत से पक्ष हैं जिन पर इस सीरीज में रौशनी डालने का प्रयास किया गया है।

भरोसेमंद और सुविधाजनक खरीदारी के लिए राज कॉमिक्स ऑनलाइन स्टोर भी शुरू कर दिया गया है। **www.rajcomicsuinverse.com** से आप पसंदीदा कॉमिक्स, नॉवेल्टीस इत्यादि की खरीदारी कर सकेंगे। किंडल पर भी अब राज कॉमिक्स बाय संजय गुप्ता उपलब्ध है।

आशा है कि आप सभी को भी यह श्रृंखला पसंद आएगी और मुझे आपका अमूल्य सहयोग हमेशा मिलता रहेगा।

अपना प्यार सदैव बनाये रखें और कॉमिक्स के उत्थान में साझेदारी निभाते रहें।

आपका
संजय गुप्ता!

संजय गुप्ता प्रस्तुत करते हैं

नागपर्व

नरकनाशक नागराज

नाग ग्रंथ शृंखला खण्ड-2

लेखक
नितिन मिश्रा

चित्रांकन
हेमंत कुमार

स्याहीकार
विनोद कुमार, जगदीश कुमार

रंगसज्जा
भक्त रंजन

शब्द सज्जा एवं डिजाइन
मंदार गंगेले, गौरव गंगेले

मुखपृष्ठ चित्रांकन
हेमंत कुमार(चित्र), विनोद कुमार (स्याही)
मोईन खान (रंग)

संपादक
संजय गुप्ता

राज कॉमिक्स है मेरा जनून
संस्थापक : राजकुमार गुप्ता, संजय गुप्ता

राज
कॉमिक्स
By संजय गुप्ता

नागपर्व (नागग्रंथ श्रृंखला भाग 2)
मुद्रण तिथि - अप्रैल 2022

Kh.No. 703, मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली-110084

राज कॉमिक्स 1986-2022 - मनोरंजन का चौथा दशक

Narak Nashak Nagraj Created By Sanjay Gupta

फेसबुक पर हमारे ग्रुप **Raj Comics By Sanjay Gupta** से जुड़ें।

sales.alphabook@gmail.com

visit us at www.rajcomicsuniverse.com

 rajcomicsbysanjaygupta

महादेव की जटाओं से निकली गंगा नदी।
जिसे आदि काल से मानव माता गंगा कह कर पुकारता है...
माता गंगा... जिसकी दुग्ध धार सरीखी लहरों से पोषित होकर मानव सभ्यता फूली फली। काशी नगरी ऐसी ही पुरातन सभ्यता का आधुनिक प्रारूप है।
जिसके पुरातन नाम वाराणसी का तात्पर्य, जिसे महादेव ने अपने माथे पर नासिका के ऊपर वरण किया हुआ हो....
...और आज ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे महादेव की क्रुद्ध भृकुटियों से वाराणसी को गंगा अपने वेग से धो डालना चाहती थी।
...ममतामयी लहरें जिन्होंने सदैव मातृत्व के स्नेह से अपने भक्तों को कोपलों की भाँति सींचा। आज प्रचंड विनाशकारी रूप धारण कर उनका संहार करने को आतुर थीं।
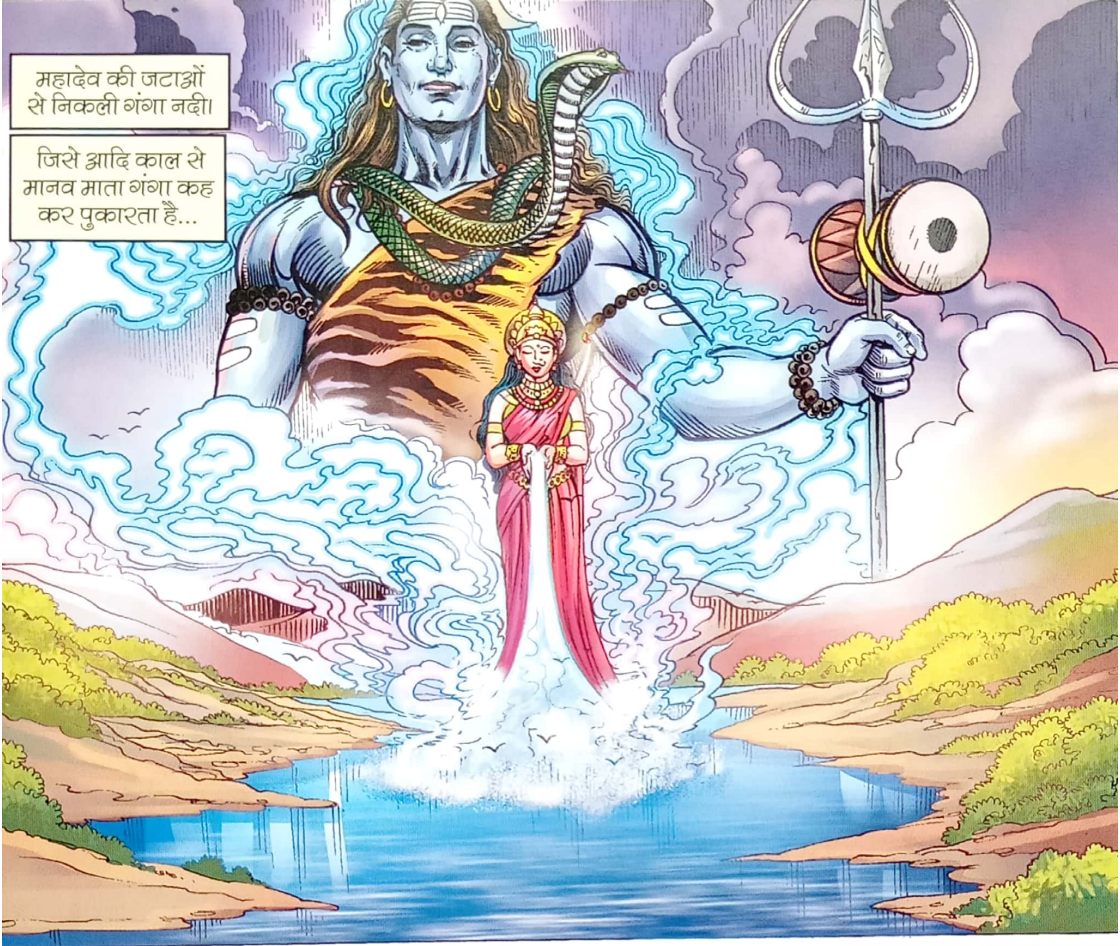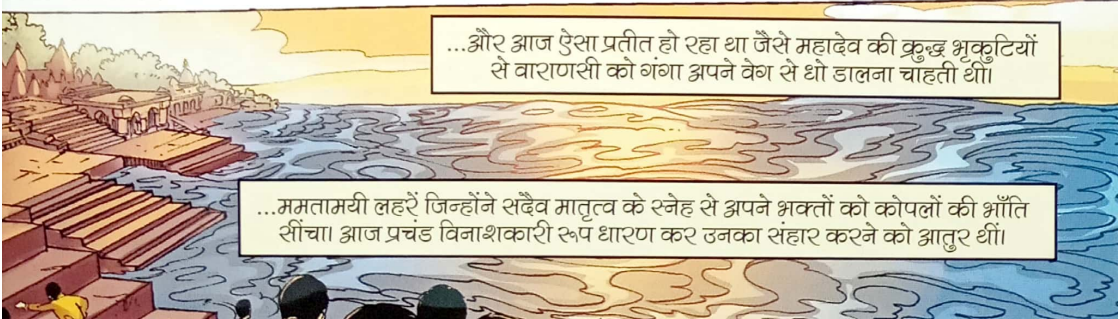
हम सब मारे जायेंगे!
बचाओ-बचाओ
प्राकृतिक आपदा से कौन बचाएगा?
परन्तु माता की क्रोधाग्नि को शांत करने के लिए सपूत अपनी प्राणाहुति देने से कब कतराए हैं भला।
रक्षकों का जूनून अपनी जीवन की कीमत नहीं जानता।
नागराज! अरे यह तो नागराज है न??
हाँ! लगता तो वही है। मैंने सुना है इसके हाथ से सांप छूटते हैं।
अबे। ये सारी दुनिया ने सुना है, पर यह भला हमें कैसे बचाएगा?
मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं किसी सपने से बाहर निकला हूँ।
वह जलसर्प, पाताल नागलोक, वे नागबाबा और उनकी बातें! क्या यह सब वाकई घटित हुआ था?
नागराज भी है यहाँ पर!
इसके होने से मुझे पहेली सुलझाने में थोड़ी और मोहलत मिल जाएगी।
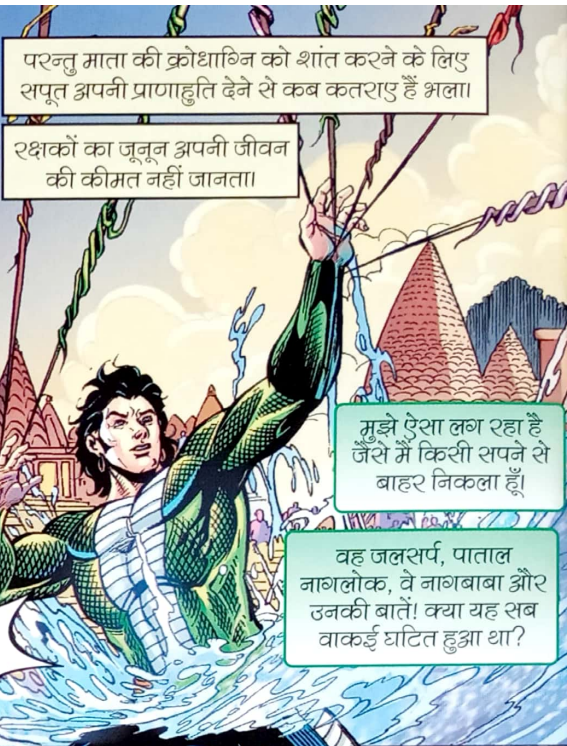
नागराज! क्या तुम इन लहरों को होल्ड कर सकते हो?
मैं इससे पहले समुद्र की तूफानी लहरों का वेग सर्प सेना निर्मित बाँध से काबू कर चुका हूँ, डोगा...
...मेरे सर्पसैनिकों के लिए यह कार्य अधिक दुष्कर नहीं होगा।
बाहर आओ मेरे जांबाज सर्प सैनिकों।
सर्पसेना तेजी से घाटों के किनारे बाँध का निर्माण करने लगी।
अब तक सुना था आज देख भी लिया! इसकी कलाइयों से तो सचमुच सांप निकलते हैं।
येये...ढेर सारे सांप!
गुर्र... वुफ्फ... फुफ्फ (जल्दी मुझे उसके पास ले चलो)!
गुर्र!!!
वुफ्फ... वुफ
भौं... भौक्क

दोनों महानायक उस विनाशकारी सैलाब को थामने में सर्वस्व लगा रहे थे।
दूसरी तरफ एक ऐसा भीषण सैलाब उमड़ रहा था जो सांप्रदायिक सौहार्द में आग लगा कर पूरी मानवता को धधकते और झुलसते देखने का अभिलाषी था।
बहुत सह लिया अत्याचार... अब करेंगे खुल कर वार!!
इनका उद्देश्य खुद उलझना नहीं बल्कि अपने बुने नफरत के जाल में भोले-भाले लोगों को उलझाना था।
अरे ओ चाचा! रगों का खून पानी हो गया है क्या? अपने देवी-देवताओं का अपमान कैसे सहन करते हो।
हथियार उठाओ वरना धर्म खत्म हो जाएगा!
असहिष्णुता हो रही हमारी कौम के साथ! अपने ही देश में आतंकी और गद्दार समझा जाता है हमको।
हम जितना दबेंगे ये उतना ही दबाएंगे!
ईंट का जवाब पत्थर से देना होगा भाइयों।

नफरत की चिंगारियों को भड़कते शोले बनने में कहाँ समय लगना था।
हथियार उठाओ वर्ना निशान मिट जाएगा तुम्हारा।
ये धर्मान्ध काफिर हमें नहीं छोड़ेंगे! खत्म कर दो इनको।
उन्मादित भीड़ उस विनाशकारी दावानल के समान होती है जो घर जलाने से पहले धर्म नहीं पूछती।
मारो सालों को!!
बोटी-बोटी काट डालो कमीनों की!
लेकिन नफरत की आग कितनी भी उद्दंड सही...
...उसे बुझाने की पहल आस्था और विश्वास के निश्छल जल से ही होती है।
रुक जाओ सब लोग!
पागल हो गए हो क्या जो इन गैरों के बहकावे में आकर अपनों का खून बहाने चल पड़े।
अब्दुल इनके बीच मत पड़, ये मार डालेंगे हमें।
चल भागते हैं यहाँ से।
तुम लोग जाओ, अपनी जान बचाओ।
अम्मी कहती है कि हमेशा उसके लिए खड़े होना जो सही है, भले ही तुम अकेले क्यों ना खड़े हो।
बचपन से ही ये लोग आतंकी बनने की ट्रेनिंग शुरू कर देते हैं...
आतंकवाद के बीज को पनप कर जहरीली बेल बनने से पहले ही खत्म कर दो!
हाँ-हाँ खत्म कर दो!

खबरदार जो किसी ने बच्चे को हाथ लगाने की हिम्मत भी की तो।
गंगा मैया की सौगंध यहीं धरती में गाड़ देंगे।
अबे पंडित! पगला गए हो का! एक मुसलमान को बचाने की लिए बाबा महादेव का त्रिशूल उठा लिए।
धरम भूल गए हो का पंडित?
संसार का सर्वप्रथम धर्म है सनातन धर्म। जो सदा रहा है, सदा रहेगा! आसमान गिर रहा चिल्लाने से जैसे आसमान नहीं टूट कर गिरता वैसे ही सनातन धर्म किसी के चिल्लाने से मिट नहीं जाएगा।
आततायी जानते थे कि उनके खिलाफ उठी हुंकार लोगों के जमीर जगा सकती थी। उस आवाज को दबाना उनके लिए आवश्यक था।
इस हिंदू आतंकवादी को ना रोका तो कल इसके जैसे लाखों खड़े हो जाएँगे। मारो इसे!
जो धर्म का नहीं हुआ तुम्हारा क्या होगा। खत्म कर दो इस पंडित को।
दंगाइयों के दिलों में पुती शैतानियत की स्याही उनकी आंखों में साँप जैसी चमक पैदा कर रही थी।
उनकी बात जैसे उन जड़ बुद्धियों के लिए पत्थर की लकीर थी।
और लकीर के फकीर से ज्यादा खतरनाक कोई नहीं होता।
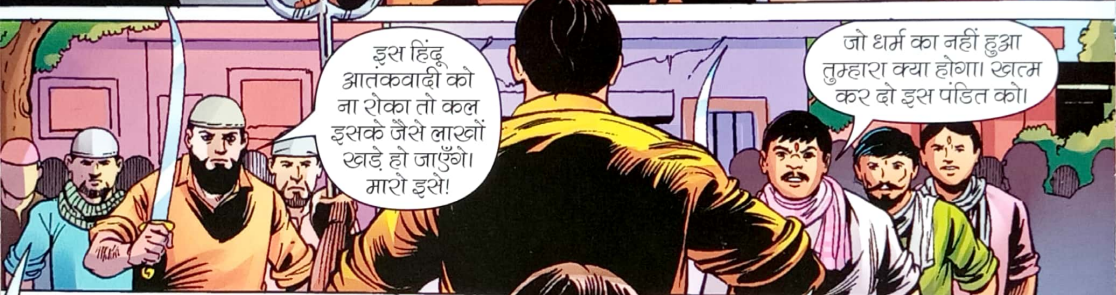
डोगा पहेली हल करने के बेहद करीब था।
पनडुब्बी बाबा। भारत के इकलौते ऐसे साधु जिसके पास पनडुब्बी यानी सबमरीन है।
वूफ्फ-वूफ्फ (यही है वो)
मेरे दादा को एक अंग्रेज अफसर ने पनडुब्बी उपहार स्वरूप दी थी।
तब से लोग उन्हें पनडुब्बी बाबा पुकारने लगे, उनके बाद मेरे पिता और फिर मेरा भी यह उपनाम बन गया।
पर तुम हमसे क्या चाहते हो बच्चा?
जानकारी! अब वह पनडुब्बी कहां है?
सालों तक वो बंद पनडुब्बी यहीं घाट किनारे पड़ी हुई थी फिर कुछ दिन पहले अचानक ही गायब हो गयी।
ओह! शायद मैं और मेरे साथी उसका पता लगा सकें।
लोहे की मछली यानी पनडुब्बी जोकि साधु की गागर से निकली यानी पनडुब्बी बाबा से चुराई गयी।
पहेली तो सुलझ गयी। बस अब पनडुब्बी तक पहुँचना होगा।
डिसरप्टर की लोकेशन पता चल गयी नागराज।
वेल डन डोगा। हमें जल्द से जल्द डिसरप्टर सोर्स को नष्ट करना होगा वर्ना इस विशाल नदी को बांधने के लिए मेरे जिस्म में सर्प सेना कम पड़ जाएगी।

नागराज की आशंका निरर्थक नहीं थी। गंगा का वेग संयम की सीमाओं को लांघ कर अपनी राह में आती हर चीज का नाश करने पर आमादा था।
हर गुजरते क्षण के साथ नागराज के सर्प सैनिकों के लिए विशाल नदी के बढ़ते हुए वेग को बांध पाना असम्भव हो रहा था।
मेरे शरीर में सर्प सैनिकों की संख्या अब बिल्कुल नगण्य है।
गररररड़
और जो बचे हैं उन्हें विशेष कारण से मैं बाहर नहीं निकाल सकता।
मेरे लिए अब इस बाढ़ को रोके रख पाना असंभव हो गया है।
स्प्लैश

वह रही पनडुब्बी। डिसरप्टर सोर्स यकीनन इसके अंदर ही है लेकिन इससे उठती तीव्र तरंगे विशाल भँवर बना रही हैं जिसके कारण इसके करीब पहुँचना नामुमकिन है।
लहरों के वेग और भीषण दबाव से डोगा बेहोश हो गया है।
डोगा को बचाना होगा।
इसे सुरक्षित किनारे तक पहुँचा दो मित्रों।
जो आज्ञा नागराज।

बड़ी संख्या में सर्प सैनिक निकल जाने से नागराज की शक्तियाँ क्षीण हो गयी थीं।
भँवर के बाह्य दबाव के साथ-साथ नागराज एक आंतरिक दबाव का सामना भी कर रहा था।
ह्मफ!! वह मेरे शरीर की कैद से निकलने की पुरजोर कोशिश कर रहा है।
मुझे अब परिस्थिति का सामना बिना अपनी नाग शक्तियों का प्रयोग किए करना होगा।
नाग शक्तियों के बगैर भी नागराज की शारीरिक शक्ति किसी अतिबलशाली मनुष्य से सौ गुना अधिक थी।

मैं अपनी पूर्ण शक्ति लगाकर इस पनडुब्बी तक पहुँच तो गया लेकिन अब ना मेरे फेफड़ों में प्राण वायु शेष है ना शरीर में शक्ति कि इसे नष्ट कर सकूँ।
नागराज की जगह कोई साधारण इंसान होता तो डिसरप्टर सोर्स से उत्पन्न भँवर का दबाव उसकी हड्डियों को पीस डालता।
परंतु वह नागराज था जिसके साथ सदैव उसके गुरु का आशीर्वाद था।
वत्स नागराज! आंखें खोलो, सम्पूर्ण मानवता की रक्षा का दायित्व है तुम पर। यूँ हार नहीं मान सकते तुम।
अपनी नाग शक्तियों को पहचानो वत्स। तुम एक विलक्षण नाग मानव हो।
जिसके साथ उसके गुरु का आशीर्वाद हो...
...और विषम परिस्थितियों में भी पराजय ना स्वीकारने की दृढ़ इच्छाशक्ति...
तुम मुझे सुन सकते हो वत्स!
अपनी आंतरिक नाग शक्तियों को जगाने का समय आ गया है।
अपने नाग अस्तित्व को स्वीकारने का समय आ गया है।
जय बाबा गोरखनाथ!!
...उसे असम्भव को सम्भव बनाने के लिए किसी देवता को पुकारने की जरूरत नहीं।
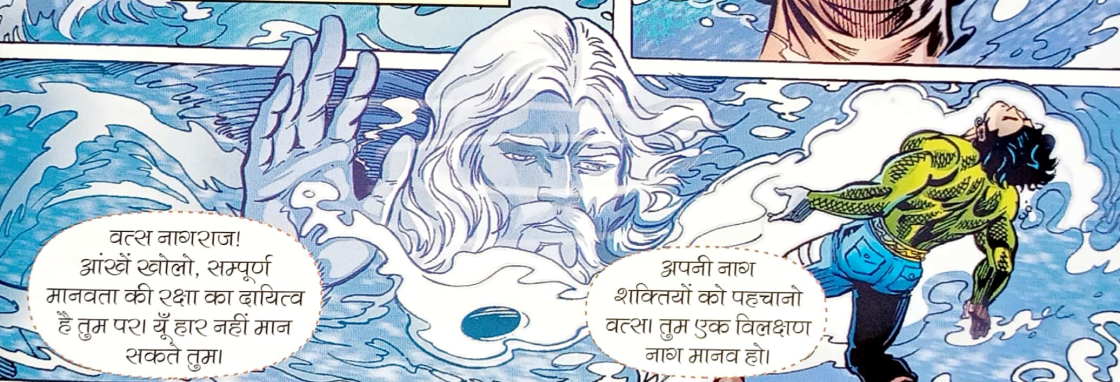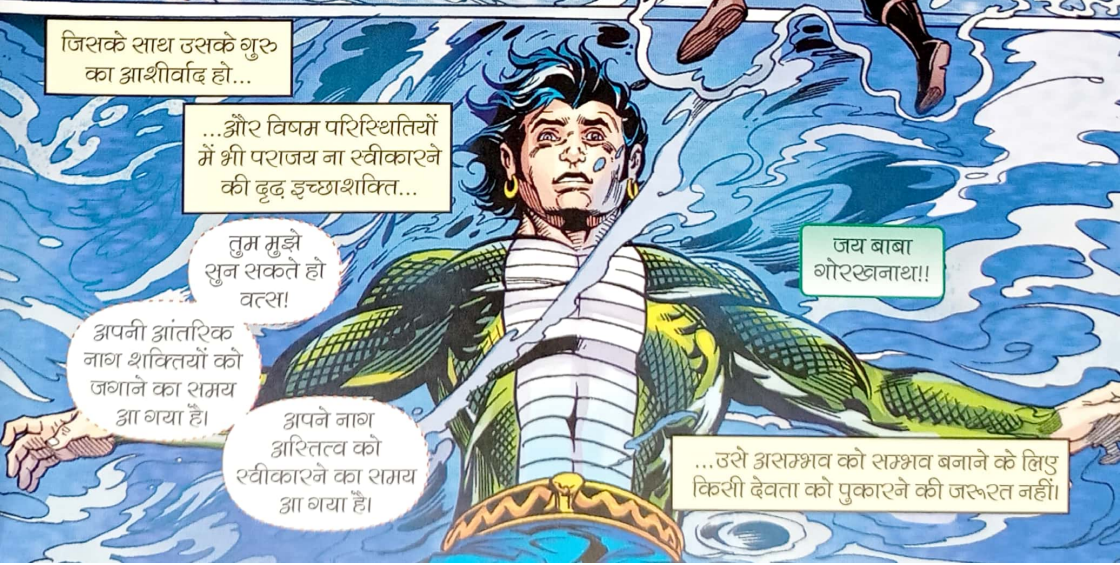
बाबा गोरखनाथ एक बार फिर काल से मेरी रक्षा कर के अंतरध्यान हो गए।
परंतु मेरी कौन सी नाग शक्ति का बोध कराना चाहते थे गुरुदेव मुझे?
अगले ही क्षण नागराज अपनी नाग कुंडिलिनी जागृत कर रहा था।
विलक्षण नाग मानव नागराज की नाग कुंडिलिनी जागृत हो रही थी।
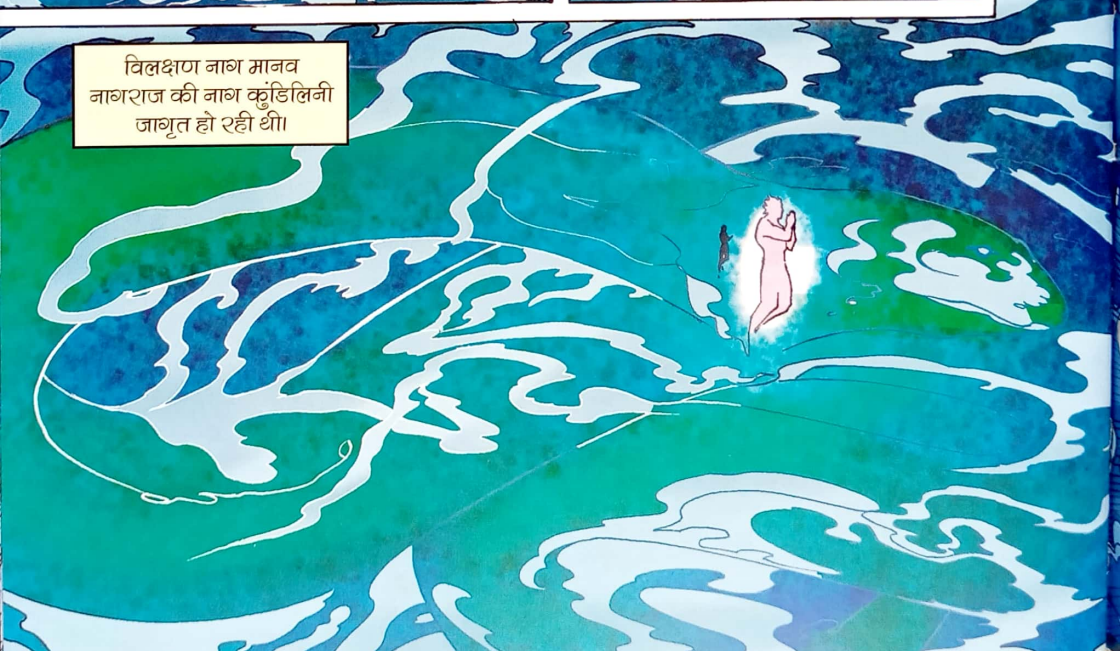
नाग कुंडिलिनी जागृत कर के नागराज अपना विराट नाग रूप प्राप्त कर चुका था।
कड़ड़ ड़ॉम
मेरे इच्छाधारी नागरूप से भिन्न यह कुंडिलिनी द्वारा जागृत विकराल नाग रूप अद्‌भुत है।
ऐसा प्रतीत हो रहा जैसे मैं इस शक्ति को अपने अस्तित्व के आरम्भ से ही संचित किए हुए था। लेकिन इसके बारे में भूले हुए था।
पनडुब्बी और उसके अंदर इंस्टॉल किया गया डिसरप्टर सोर्स नष्ट होते ही भँवर और लहरों का वेग थम रहा है।

हे बाबा गोरखनाथ! मेरी नाग कुंडिलिनी मेरे सामने यह कैसे अनोखे दृश्य प्रस्तुत कर रही है।
ऐसा लग रहा जैसे यह सब कुछ मैं सजीव अपनी आंखों के सामने घटित होते देख रहा हूँ।

कुमारी विसर्पी को बंदी बना कर तूने अपनी मृत्यु को ललकारा है नीच सर्प।
तू और लंगारा जाति मिलकर पाताल लोक पर कब्जा करने का जो कुत्सित षडयंत्र रच रहे हो वह राजनाग के रहते कदापि सफल ना होगा।
यह विसर्पी नहीं मेरी अप्सरा है नीच। जिसे तू सिर्फ इसलिए प्राप्त करना चाहता है ताकि पाताल लोक पर एक छत्र राज कर सके।
आज तेरी सांसों की डोर के साथ तेरा यह स्वप्न भी तोड़ देगा तौसी।
अपनी आंखों के सामने उभर रहे दृश्यों का कारण समझ पाने में नागराज पूरी तरह असफल था। किसी मूक दर्शक की भाँति वह मात्र उन दृश्यों के घटित होने का साक्षी था।

परंतु उसकी अंतरात्मा चीख-चीख कर कह रही थी कि वह खुद इन घटनाओं को जी चुका है।
नहीं, रुक जाओ!
मैं तुम्हें बचा लूँगा, कुमारी विसर्पी।
हर एहसास, हर मनोभाव को महसूस कर चुका था।
ये वे भावनाएँ थी जिन्हें नागराज ने अपने जीवन में सिर्फ एक ही इंसान के लिए महसूस किया था। नियति के लिए!
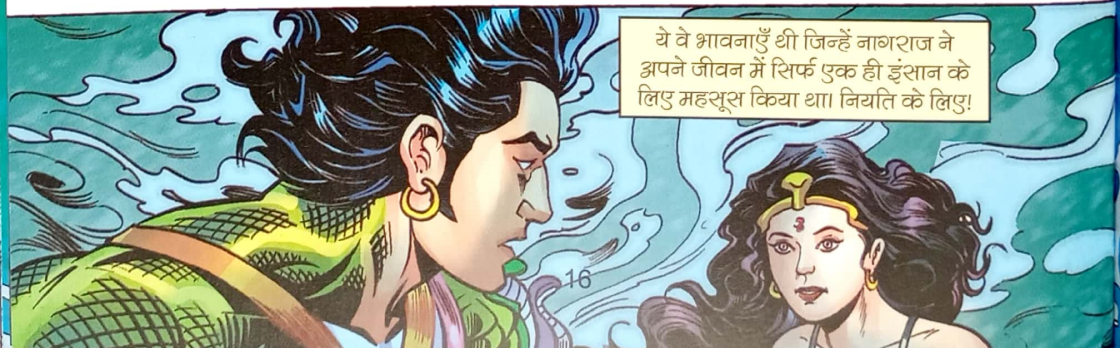
भावनाओं के आवेग पर वह एक प्रचंड प्रहार हावी था।
अप्सरा मेरी है! सिर्फ मेरी!
वार इतना प्रचंड था की उसका प्रभाव नागराज की मानसिक तंत्र की दीवारों को भेदते हुए नागराज के यथार्थ तक आ पहुँचा।
आ...ह!
उस आघात से नागराज और उसका मस्तिष्क जैसे नदी के अंधेरे तल में डूबते जा रहे थे।
लेकिन जिनका जन्म महान कर्म करने के लिए होता है ईश्वर उनके भाग्य में चिर शत्रुओं के साथ-साथ सच्चे मित्र लिखना नहीं भूलते।

तुम ठीक तो हो मित्र?
हाँ मित्र!
खतरा टल गया नागराज। आखिरकार तुमने कर दिखाया।
नहीं दोस्त, आखिरकार हमने कर दिखाया।
नागराज! नागराज!
डोगा! डोगा!
यह सारा प्रकरण भारती न्यूज चैनल की तेज-तर्रार फील्ड रिपोर्टर और युवाओं की आदर्श व प्रेरणा स्रोत सारिका बोस की नजरों और कैमरे से अछूता नहीं था।
कैमरा ऑन रखना कैमरामैन। मुझे एक-एक पल की रिकॉर्डिंग चाहिए समझ गए!
जी मैडम!
नागराज के अंतर्मन में भावनाओं का भँवर अब भी घुमड़ रहा था।
मैंने नीचे नदी के तल में जो दृश्य देखे थे वो आखिर क्या थे? कौन था वह महाबली योद्धा जिसके वार के प्रभाव ने मेरी चेतना लोप कर दी!
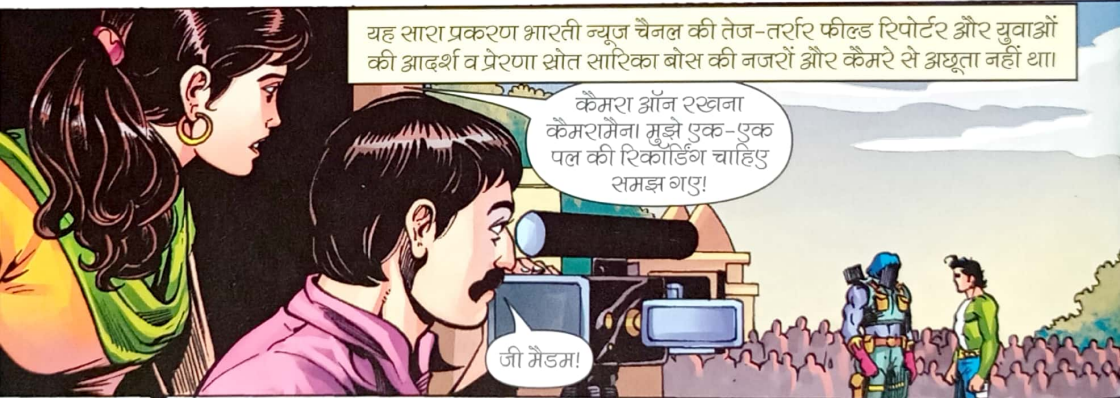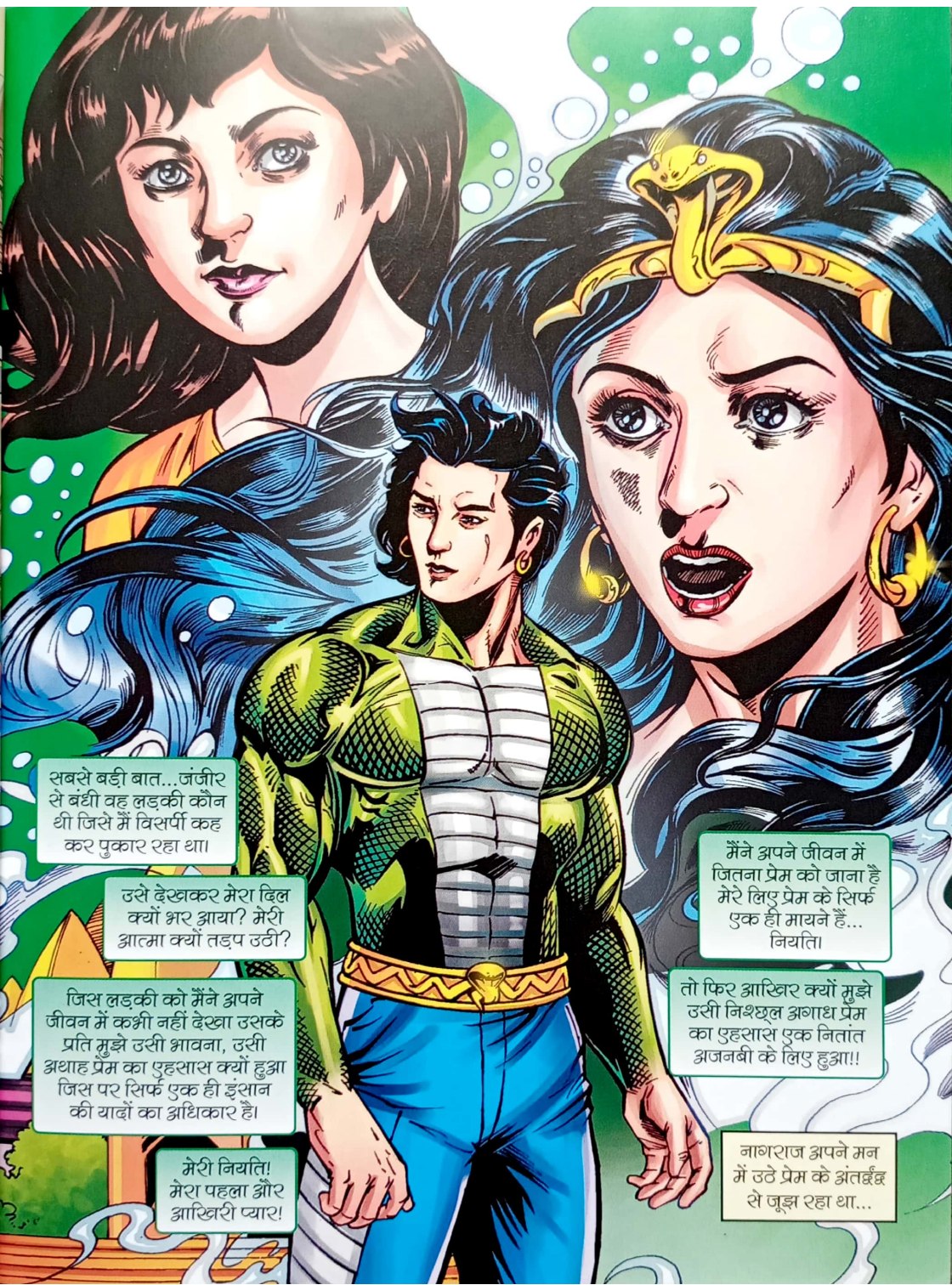
सबसे बड़ी बात...जंजीर से बंधी वह लड़की कौन थी जिसे मैं विसर्पी कह कर पुकार रहा था।
उसे देखकर मेरा दिल क्यों भर आया? मेरी आत्मा क्यों तड़प उठी?
जिस लड़की को मैंने अपने जीवन में कभी नहीं देखा उसके प्रति मुझे उसी भावना, उसी अथाह प्रेम का एहसास क्यों हुआ जिस पर सिर्फ एक ही इंसान की यादों का अधिकार है।
मेरी नियति! मेरा पहला और आखिरी प्यार!
मैंने अपने जीवन में जितना प्रेम को जाना है मेरे लिए प्रेम के सिर्फ एक ही मायने हैं... नियति।
तो फिर आखिर क्यों मुझे उसी निश्छल अगाध प्रेम का एहसास एक नितांत अजनबी के लिए हुआ!!
नागराज अपने मन में उठे प्रेम के अंतर्द्वंद्व से जूझ रहा था...

...वहीं दूसरी तरफ मानवता सम्प्रदायों के अंतर्द्वंद्व में।
मारो लड़के को!
जहां एक ब्राह्मण पंडित एक मुसलमान बच्चे को बचाने के लिए...
शर्कक
खच्च
...और एक मुसलमान बच्चा हिंदू ब्राह्मण को बचाने के लिए...
... अपने प्राण न्योछावर करने को तत्पर हैं और उनके ही समुदाय उनके प्राण लेने को आतुर।
मारो पंडित को।
नहीं! मत मारो इन्हें!! आह!
मार डालो दोनों को...जिंदा मत छोड़ो।
लेकिन मारने वाले और बचाने वाले के बीच का सबसे बड़ा अंतर यही होता है कि मारने वाला धर्म और जाति देखता है...
...बचाने वाले का धर्म और जाति से कोई लेना-देना नहीं होता।
वह सिर्फ इंसान को बचाता है क्योंकि इंसानियत से ऊपर कोई मजहब, कोई धर्म नहीं।
कौन सा धर्म है तुम्हारा? कौन सा मजहब है?

जो इतना कमजोर है कि एक बच्चे और एक पुजारी को मार कर अपना वर्चस्व जताना चाहता है?
सच यह है कि तुम्हारा कोई धर्म नहीं... तुम सब निराधम हो निराधम।
तुम्हें धर्म की नहीं, हैवानियत की भाषा समझ आती है और यह भाषा मैंने बचपन में कुत्तों की बोली के साथ बहुत अच्छे से सीखी है।
नफरत भी वह सम्मोहन है जो इंसान की अंतरात्मा पर हिंसा और उन्माद का पर्दा डाल उसे अंधा कर देती है।
लेकिन दुर्बल पर दुर्जन जब भारी पड़े, तो पाप का सम्मोहन तोड़ने कोई नरक नाशक अवश्य आता है।
ये सभी लोग किसी सम्मोहन में बंधे हुए हैं!
इनकी आंखें बता रही हैं कि यह कोई साधारण सम्मोहन नहीं बल्कि शक्तिशाली इच्छाधारी नागों द्वारा किया सम्मोहन है।

गौर से देखो इस कुत्ते सी सूरत को। क्योंकि कुत्ता धर्म और जाति का भेदभाव नहीं करता...
...कुत्ता धर्म पूछ कर नहीं, उसका कर्म देखकर भंभोड़ता है।
बचो डोगा!!
ये सभी सम्मोहित हैं डोगा।
ये लोग टेररिस्ट नहीं बल्कि आम लोग हैं...
जिन्हें हिप्नोटाईज कर के साम्प्रदायिक रूप से भड़काया गया है।
मैं इनका सम्मोहन तोड़ सकता हूँ!
पर इतने सारे लोगों को एक-साथ हिप्नोटाईज कैसे किया गया होगा?

काश मैं तुम्हें समझा सकता होगा लेकिन ऐसा करने से तुम्हें इच्छाधारी नागों के अस्तित्व के बारे में भी बताना पड़ेगा...
..और मैं यह बिल्कुल नहीं चाहता।
इच्छाधारी नागों के अस्तित्व से मानवों का अनभिज्ञ रहना ही बेहतर है भले ही वो मानवता के रखवाले क्यों ना हों।
कुछ ही पलों में सम्मोहन का आवरण उतर चुका था और अपने कर्मों की नग्नता से भीड़ शर्मसार थी।
हमें माफ कर दो नागराज, हम अपने वश में नहीं थे।
तुम्हारी नफरत और हिंसा मिल कर भी इन दो निरीह इंसानों के इंसानियत के जज्बे को तोड़ ना पाई।
प्रेम और मानवता से बढ़कर कोई धर्म नहीं।
तुम लोग भी अपने मन के उस काले कोने में मानवता की लौ जलाओ ताकि अगली बार कोई आततायी...
...तुम्हें अपने फायदे के लिए एक हथियार में तब्दील ना कर दे!

हम अपने कृत्य पर ही नहीं, अपनी विचारधारा पर भी शर्मिंदा हैं।

तुम दोनों ने हमारी सही मायनों में आँखें खोल दीं। तुम दोनों हमारे हीरो हो।

सच्चा सुपरहीरो वह नहीं जिसके पास शक्तियाँ हों।

सच्चा सुपरहीरो वह है जो शक्तियाँ ना होते हुए भी सच्चाई के लिए लड़ने का जज़्बा रखता हो। सच्चे सुपरहीरो अब्दुल और पंडित जी हैं।

ओ बेटे मौज कर दी... आज तो डंके बजेंगे अब्दुल और पंडित के नाम के!

अब्दुल! पंडित! अब्दुल! पंडित!

ओह! मुझे इनके यहाँ आने की अपेक्षा नहीं थी।

आप यहाँ?

अपने बेटे को देखने को जी चाहा सो चला आया। बाप का दिल है ना...
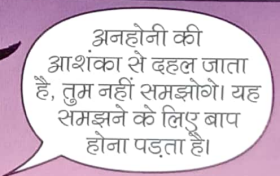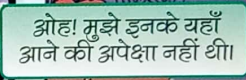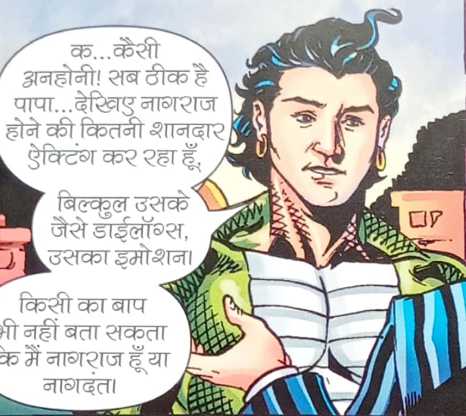
क...कैसी अनहोनी! सब ठीक है पापा...देखिए नागराज होने की कितनी शानदार ऐक्टिंग कर रहा हूँ,
बिल्कुल उसके जैसे डाईलॉग्स, उसका इमोशन।
किसी का बाप भी नहीं बता सकता कि मैं नागराज हूँ या नागदंत।
शाबाश मेरे बेटे! आज... गले नहीं लगेगा अपने बाप के?
ब...बिल्कुल पापा... क्यों नहीं!
जानता है बेटे... एक माँ के लिए औलाद के प्रति अपना प्रेम प्रकट करना सहज है।
एक माँ को प्रयत्न नहीं करना पड़ता परंतु एक पिता के लिए उन्हीं भावनाओं की अभिव्यक्ति एक दुष्कर कार्य है।
अपना प्रेम, अपना समर्पण, अपनी भावनाएँ व्यक्त कर पाना एक पिता को नहीं आता बेटा।
वह औलाद की फिक्र कर सकता है पर जता नहीं सकता, वो औलाद से प्रेम करता है पर उसे बता नहीं सकता।
एक पिता का दिल भी अपनी औलाद के लिए यूँ ही धड़कता है जैसे एक माता का।
जैसे एक माता के लिए उसकी हर संतान का एहसास भिन्न होता है वह आँख बंद कर के भी अपनी अलग-अलग संतान को पहचान सकती है...
...वैसे ही एक पिता भी अपनी औलाद को पहचानता है बेटा।

बाप तन की आँखों से नहीं, अपनी आत्मा, अपने मन की आंखों से अपनी औलाद को देखता है...
...और कौटिल्य नागमणी भी एक बाप है।
कौटिल्य नागमणी के अंदर बसी बाप की आत्मा अपनी औलाद को सूरत से नहीं स्पर्श से पहचान जाती है नागराज।
जब नागदंत मुझे डैडी पुकार कर मेरे गले लगे या तुम पापा बुला कर, मेरा दिल तुम दोनों को अब भी पहचानता है।
या...यानी आप पहले से जानते थे कि मैं नागदंत नहीं हूँ।
जब तुम मेरी लैब में आकर मुझसे गले लगे थे उस वक्त से ही।
मैंने नागदंत को तुम्हें अपने अंदर समाने भेजा था और मेरा बेटा सफल भी हो गया, पर तुमने उस औघड़ के रूप में जाने कैसा छल खेला...
मैंने कोई छल नहीं खेला, मैं खुद हतप्रभ था। मुझे नहीं पता कि वह औघड़ कौन था।
बस उसकी चिलम के नशे से नागदंत की चेतना कुछ पल को लोप हुई और मैंने उसे अपने अंदर ठीक वैसे ही समाहित कर लिया जैसे उसने किया था।
उसका मस्तिष्क पढ़ कर मुझे उसके और आपके बारे में पता चल गया। बस, नहीं पता चला तो यह कि आपकी संतान की शक्ल और शक्तियाँ हू-ब-हू मेरे जैसी कैसे हैं?
तुम्हारे सवालों का जवाब तुम्हें तब मिलेगा जब मेरा बेटा तुमसे मेरे साथ किए विश्वासघात का बदला ले लेगा।
लोग आस्तीन में साँप पालते हैं, मैंने तुम्हें पाल लिया और अब तुम मेरे बेटे को अपनी आस्तीन में लिए चल रहे हो। तुम्हारी शिकस्त तुम्हारे साथ-साथ चलेगी नागराज। अलविदा।
समय और नागमणी दोनो ही फिलहाल नागराज को दुविधा की मँझधार में अकेले जूझने के लिए छोड़ रहे थे।
तुम यहाँ बंद, अंधेरी गली में अकेले क्या कर रहे हो नागराज?

कुछ नहीं, नगीना। तुम्हारी शमशान साधना का कोई फल निकला?
बस यूँ समझ लो काशी आना सफल हो गया, नागराज। तुम्हारे शिवलिंग को सही मंदिर तक पहुँचाने की राह मिल गयी है।
शमशान में औघड़ का रूप धरे एक रहस्यमयी इच्छाधारी नाग ने मुझे वह रास्ता दिखाया है जो हमें उस मंदिर तक लेकर जाएगा।
नगीना पूरा घटनाक्रम नागराज को सुनाती चली गयी।
यहाँ भी रहस्यमयी औघड़। यह यकीनन वही औघड़ है जिसने नागदंत को काबू करने में मेरी मदद की थी।
आखिर कौन है यह रहस्यमयी इच्छाधारी नाग जो औघड़ का रूप धरकर बार-बार हमारी सहायता कर रहा है। कहीं यह सहायता किसी षड्यंत्र का हिस्सा तो नहीं?
अरे! दोबारा किन ख्यालों में डूब गए नागराज?
क...कुछ नहीं नगीना। यहाँ कुछ विचित्र आतंकवादियों से मुठभेड़ हो गयी। फिलहाल के लिए स्थिति नियंत्रण में है परंतु मुझे आशंका है कि स्थानीय स्तर पर शुरू हुई यह घटना आने वाले समय में बड़े कोलाहल का सबब बनेगी।
जब वह समय आएगा तब ऐसे किसी भी कोलाहल से दुनिया को बचाने के लिए नरक नाशक मौजूद होगा।
राजनगर और रूपनगर शहरों की सीमा के बाहर रूपनगर कब्रिस्तान के परे जो बीहड़ जंगल है फिलहाल हमारे सवालों का जवाब हमें वहाँ शीघ्रातिशीघ्र पहुँच कर ही मिलेगा।
तुम चलने की तैयारी करो नगीना मैं आता हूँ।
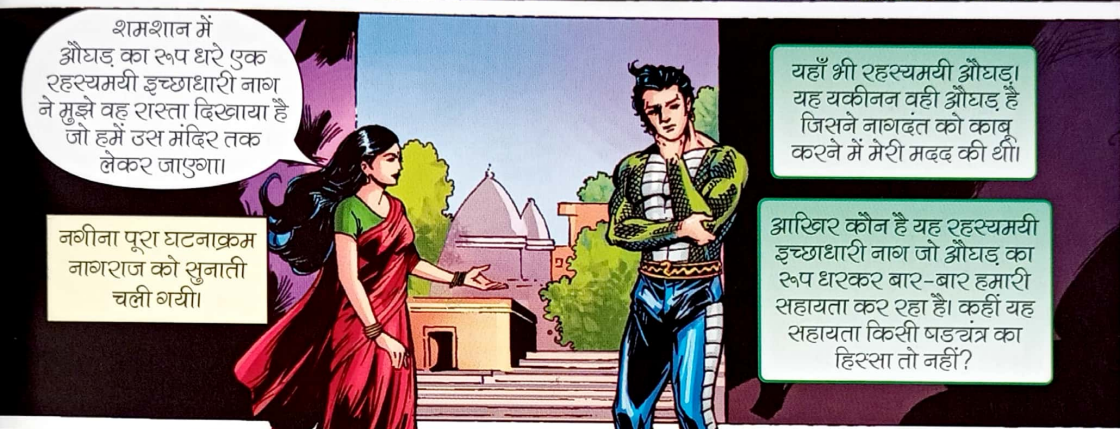
आज्ञा दो मित्र। इस काशी नगरी और तुमसे विदा लेने का समय आ गया है।
फिर मिलेंगे दोस्त।
फिलहाल मैं जिन सवालों के पीछे मुंबई से काशी आया था उनके जवाब खोजी कुत्ते की तरह सूंघ कर निकालना है।
आतंकवाद की जो अजीब नस्ल मैंने पनपते देखी है उसकी जड़ों तक पहुँचना है डोगा को।
...मेरी श्वान तंत्रा कहती है कि मुलाकात जल्द होगी।
विदा मित्र।
नागराज! ओ नागराज! आखिरकार वह समय आ रहा है जब बहुत जल्द ही तुम मेरे हो जाओगे।
नागों के सम्राट, उनके तक्षक तुम और मैं नागतांत्रिका नगीना तुम्हारी नाग साम्राज्ञी।
नागराज की नागइंद्रियाँ उसे आने वाले एक नहीं बल्कि कई संकटों की चेतावनी दे रही थीं।
इन अप्रत्यक्ष संकटों से निपटना नागराज के लिए किसी महाखलनायक को परास्त करने से अधिक मुश्किल था।

भविष्य में आने वाले सभी संकट उस वृहद् घटनाक्रम के अंश मात्र होते हैं जिसे जीवनचक्र कहा जाता है और जिसका एक पहिया राजनगर के बाहर लगे इस जूपिटर सर्कस के टेंट में घूमने वाला था।
लेडीज एंड जेंटलमेन, दिलों को थाम लीजिए। जिसका आपको था इंतजार, जिसके लिए दिल था बेकरार, वह घड़ी आ गयी...
जी हाँ दोस्तों, बस कुछ ही मिनटों में आपके सामने प्रकट होने वाला है जूपिटर सर्कस का वो चमकता सितारा जिसके सामने आते ही आँखें झपकना और दिल धड़कना भूल जाते हैं।
ऐसे फालतू डाईलॉग्स लिखने वाले को जेल में डाल कर सड़ा देना चाहिए। इस से बेहतर डाईलॉग्स तो...
...अपना पालतू बंदर बोल लेता है।
एक समय में जिसके नाम के वनस्पति घी बिके हों और खुद की शक्ल कनस्तर के डब्बे जैसी हो उसे दूसरों के बारे में बकवास नहीं करनी चाहिए।
ओहो! बंदर भड़क गया, कोई केला दो इसको।
तुम दोनों कहीं भी शुरू हो जाते हो।
ये दोनों जहां भी रहेंगे ऐसे ही लड़ते रहेंगे।

आ रहा है आपका चहेता शो स्टॉपर ध्रुव!!
ध्रुव ध्रुव ध्रुव
चौदह वर्षीय ध्रुव, जिसे जूपिटर सर्कस के शो स्टॉपर के नाम से जाना जाता था अपने हैरतंगेज एक्ट 'द फ्लाइंग मोटरसाइकल' के साथ एरिना में प्रवेश कर चुका था।
जूपिटर सर्कस हिंदुस्तान का एक-मात्र सर्कस था जो अब भी जीवित था और जिसके प्रतिदिन तीनों शो हाउसफुल जाते थे।
इस श्रेय का बड़ा हकदार जूपिटर सर्कस का यह सबसे कम उम्र का नन्हा कलाकार था जो फिलहाल इस बात से अनभिज्ञ था कि आने वाले समय में नियति ने उसे कितने विषम कार्यों को अंजाम देने के लिए चुना था।

ओह! स्टंट रोप टूट गयी है।
धत्त तेरे की!! यह टूटता तारा तो सीधे सिर पर आ गिरेगा।
लेकिन उन चुनौतियों के लिए ध्रुव अपने आप में एक चुनौती था।
उस बच्चे ने होश सम्भालते ही अपना पहला कदम आम बच्चों की तरह जमीन पर नहीं बल्कि हवा में बंधी रस्सी पर रखना सीखा था।
उसके जिस्म और दिमाग की फाइन ट्यूनिंग उसकी बाइक को भी उसके वजूद का अभिन्न अंग बनाती थी।
और इस फाइन ट्यूनिंग के बल पर, वह चौदह साल का बच्चा किसी भी विपरीत परिस्थिति की दिशा और गति अपने अनुरूप मोड़ना जानता था।
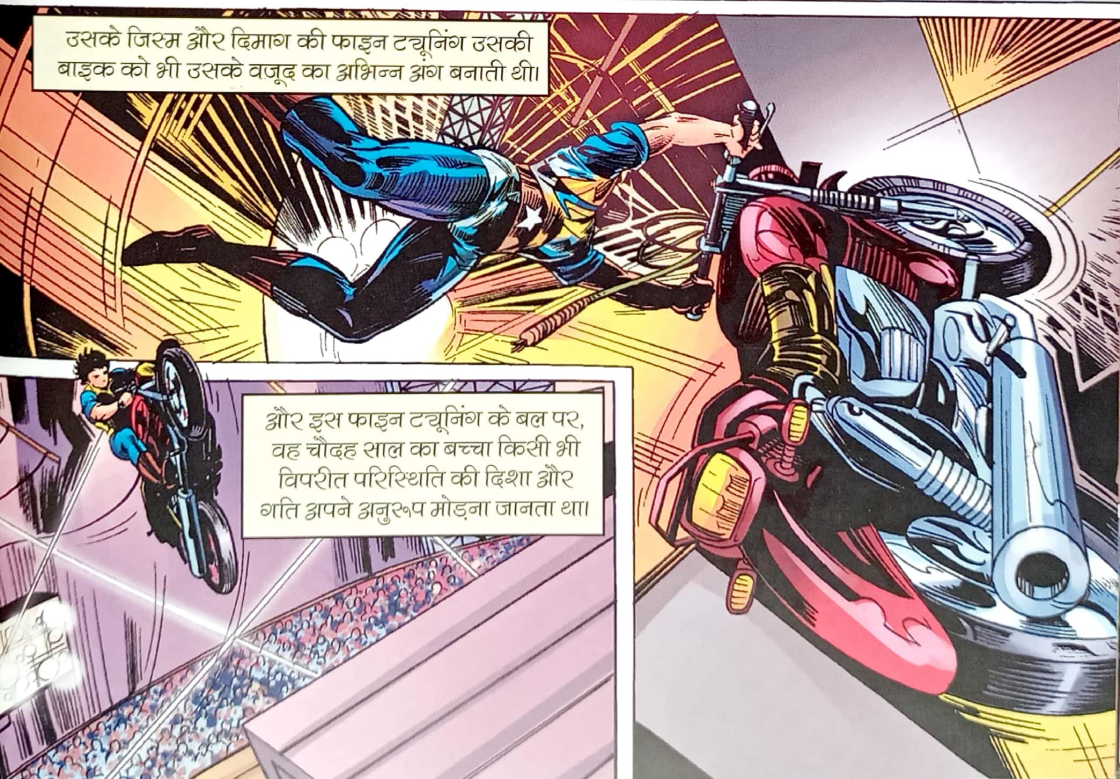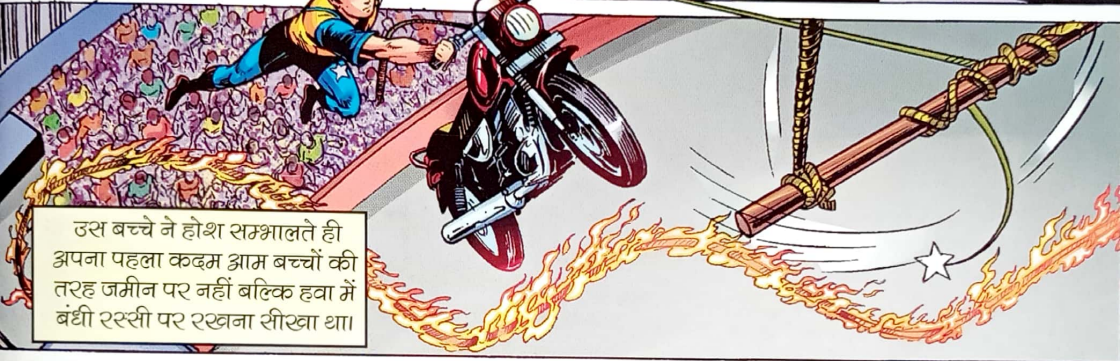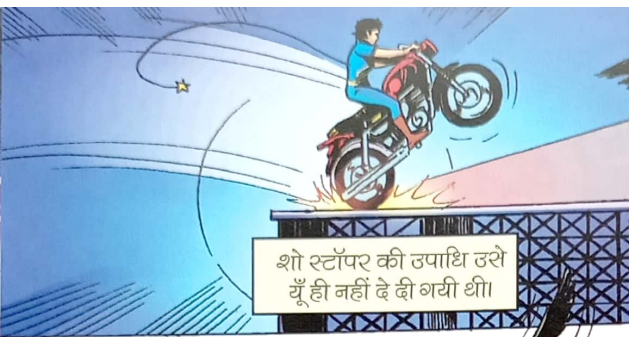
शो स्टॉपर की उपाधि उसे
यूँ ही नहीं दे दी गयी थी।
वहाँ मौजूद दर्शकों के लिए वह एक अविश्वसनीय स्टंट था, उन्हें एहसास भी ना हुआ कि किस तरह उस शो स्टॉपर ने एक बड़ी दुर्घटना को रात के सबसे बेहतरीन शो में बदल दिया था।
ध्रुव
ध्रुव
हद है! RIP में काम करते समय प्रोफेसर ने यह नहीं बताया था कि काम के दौरान ऐसे फालतू खेल तमाशे भी देखने पड़ेंगे।
हाँ यार, इससे अच्छी गुलाटी तो अपना माँटी ही मार के दिखा देता, है ना?
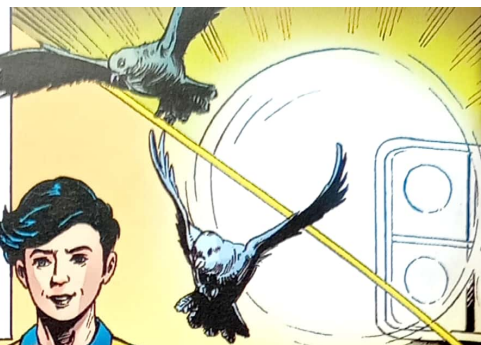
वैसे हम यहाँ शहर के बाहर बियाबान जंगल के करीब सर्कस देखने क्यों आए थे?
हमारा पैरानॉर्मल रीसर्च इन्वेस्टिगेशन अभी, इसी वक्त और इसी जगह से शुरू होता है मॉटी।
हम नहीं जानते कि हमारा सामना किन चीजों से होने वाला है...
...लेकिन वह जो कुछ भी है उसका इस जूपिटर सर्कस से कोई गहरा कनेक्शन जरूर है।
लोग वापस जाने को निकल रहे हैं, वह शक्ति इसी समय स्ट्राइक करती है।
हम मिशन के लिए निकल रहे हैं प्रोफेसर!
चौकन्ने रहो और सभी अपनी नजरें और दिमाग खुला रखो।
शैतान लड़के! आज तो तूने दो पल के लिए दर्शकों के साथ-साथ मेरी भी जान निकाल दी थी।
ओ मेरी प्यारी माँ। आप व्यर्थ ही चिंता करती हो।
जब तक आपका और पापा का आशीर्वाद मेरे साथ है मुझे कुछ भी नहीं हो सकता।
हमारा आशीर्वाद हमेशा तेरे साथ रहेगा पगले, चाहे हम रहें या ना रहें।
स्थिति गम्भीर होती जा रही है जैकब।
आज के ऐक्सिडेंट ने मुझे चिंता में डाल दिया है।
अगर ध्रुव की जगह कोई और होता तो बहुत गम्भीर दुर्घटना घट सकती थी।

हमें सर्कस के लिए नए सुरक्षा उपकरणों की सख्त जरूरत है।
इसके अलावा पिछले कुछ दिनों में नाइट शो से लौटते दर्शकों पर हमले की घटनाएँ बढ़ गयी हैं जिसकी वजह से लोग शो पर आने से कतरा रहे हैं।
अगर ऐसे ही चलता रहा तो जल्द ही बाकी सर्कसों की तरह जूपिटर सर्कस भी गुजरे जमाने की बात होगा।
क्या इन हमलों के पीछे पिछले साल बंद हुए ग्लोब सर्कस का हाथ हो सकता है?
नहीं श्याम, यह कोई और या कुछ और ही है।
अरे! अब तू आधी रात को कहाँ चला?
शेरखान को पानी पिलाना है बन्नू दादा को खाना खिलाना है।
आप तो जानती हैं कि मेरे खिलाए बिना वे भूखे ही सो जाते हैं।
आप सो जाना माँ, मैं आकर खाना खा लूंगा।
नालायक कहीं का!
इसके लिए मर-मर के इसकी पसंद का खाना बनाओ इसे खाने की सुध नहीं।
कल से टिंडे, तोरी बनाऊँगी।
या फिर यह किसी जंगली आदमखोर का काम है जिसके मुँह इंसानी लहू लग गया है। और यह ग्लोब सर्कस का क्या रहस्य है?
पापा और अंकल जेकब की बातों से ऐसा लगता है कि कोई जान-बूझकर जूपिटर सर्कस बंद कराने पर तुला है।
यह तो जूपिटर सर्कस का घोर प्रतिद्वंद्वी सर्कस था जो अचानक रातों-रात अपने सभी कलाकारों के साथ गायब हो गया था।
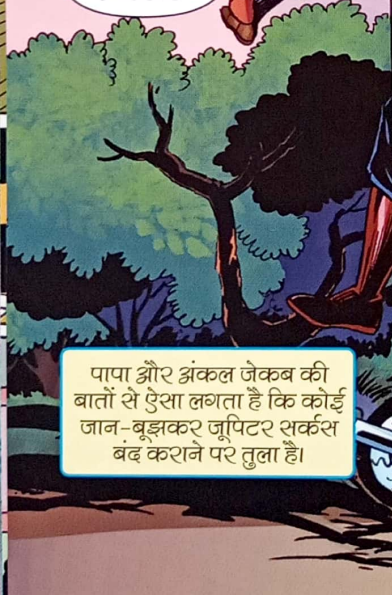
विविध घटनाक्रमों की कड़ियाँ आपस में जुड़ रहीं थीं जिसमें यह पूर्णमासी की रात सूत्रधार की भूमिका अदा कर रही थी।
आखिरकार मुझे पुनः अपने आयाम में आना पड़ा।
मेरे पास समय बहुत कम है, मुझे जल्द से जल्द नागराज को ढूँढना...
ओह! भेड़िया देवता! पूर्णमासी का चाँद!!
मैं जिस कारण से इस आयाम को छोड़ कर दूसरे आयाम में गया था उस ने आखिर मुझे चपेट में ले ही लिया।
हजारों साल पुराना श्राप जो कभी मेरा पीछा नहीं छोड़ेगा।।

...क्योंकि मैं एक मातृघाती हूँ! अपनी माँ का हत्यारा! और मातृघात संसार का सबसे जघन्य अपराध है।
मातृहत्या करने वाला पापी सृष्टि के अंत तक श्राप भोगता है और यह मेरा अनंत श्राप है।
हर पूर्णमासी की रात मेरी माँ का श्राप मुझ पर हावी होगा, चंद्रमा के उपग्रहों, फोबोस और मोबोस की शक्ति मुझे मानव भेड़िए से एक खूँखार हैवान में बदल देगी जिस पर मेरा कोई काबू ना होगा।

ठीक उसी समय जंगल के किसी कोने में-
ये जंगल में रोमांस का आइडिया कुछ ज़्यादा ही अड्वेंचरस है, अनमोल।
वह लव स्टोरी ही क्या जिसमें थ्रिल ना हो, मिताली।
ए...एक मिनट! तुमने वह आवाज सुनी क्या?
ह...हाँ! लगता? है कोई जंगली जानवर भी थ्रिल की तलाश में निकला...
बचाओ!
चीख की आवाज!
लगता है हमें देर हो गयी। जल्दी चलो साथियो...
आवाज इस ओर से आई है।

हमें वाकई देर हो गयी। हैवान अपना काम कर गया।
अधिक दूर नहीं गया होगा।
जल्दी चलो!
"वह दरिंदा आज की रात हमसे बच कर जाना नहीं चाहिए।"
हर्र्र्र्र्

सच्ची का वेयरवुल्फ! वाऊ! मैंने तो सिर्फ कॉमिक्स में ही पढ़ा था।
क्या पॉवर है। खैर सर्कस की मोटरसाइकल कोई खास भारी नहीं होती।
अपने स्टैंडर्ड की चीज उठाओ मिस्टर।
अरे...!!
अरे यार तुम तो पीछे ही पड़ गए, पता नहीं तुमको रेबीज शॉट्स लगे भी हैं या नहीं... अपने गंदे-पीले दांत मुझसे दूर रखो।
मेरे कहने का ये मतलब थोड़े ही था कि मेरी बाइक तोड़ डालो। माँ को पता चलेगा तो वे मेरी हड्डियाँ तोड़ डालेंगी।
कड़ड़ड़ाक
बाप रे! पूरा पेड़ उखाड़ डाला।
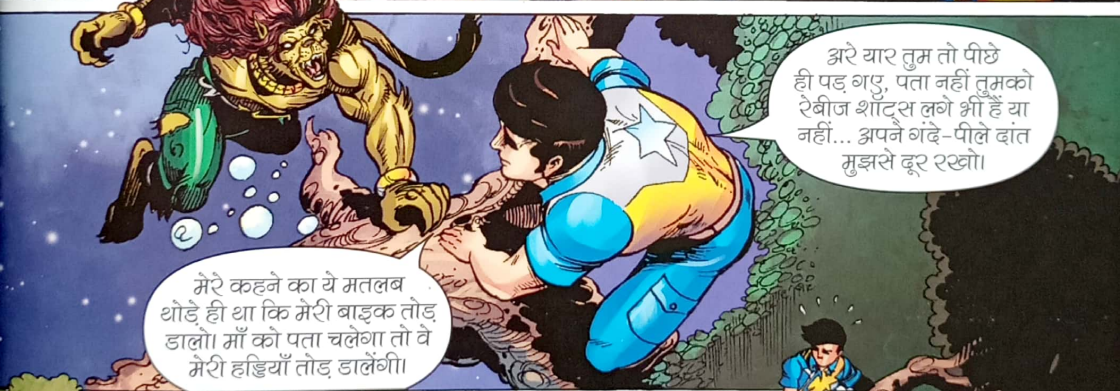
धममम
तुम हो कौन और बेगुनाह लोगों की हत्या क्यों कर रहे हो?
मैं तो सोच रहा था तुम कोई इंसान होगे जो वेयरवुल्फ बन जाता है। क्या चीज हो तुम?
मेरी बात ध्यान से सुनो लड़के, मैंने किसी को नहीं मारा।
मेरा नागराज तक पहुँचना बहुत जरूरी...
मिल गया!
यही है वह शैतान जिसने उन दोनों मासूमों की जान ली।
इसे संभलने का कोई मौका मत देना।
यह टूटा तारा इतनी रात गए यहाँ क्यों टिमटिमा रहा है?
एक मिनट रुक जाओ! तुम लोग कौन हो?
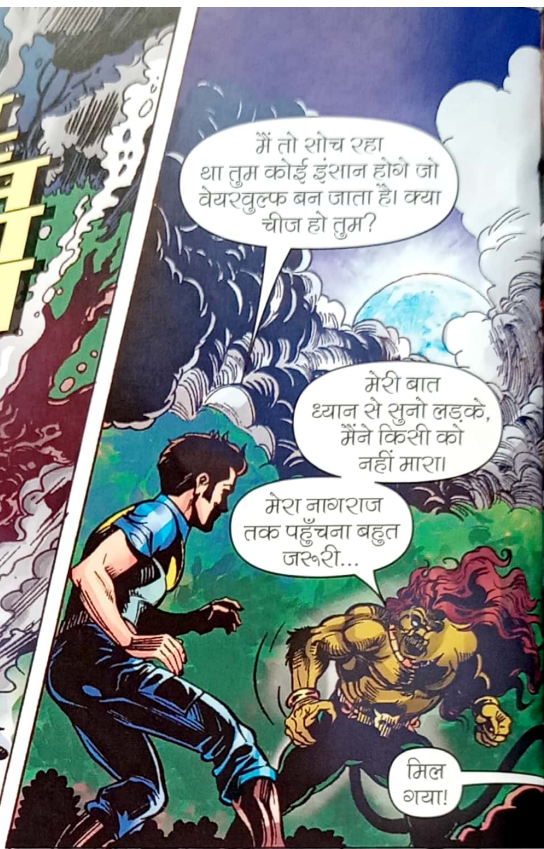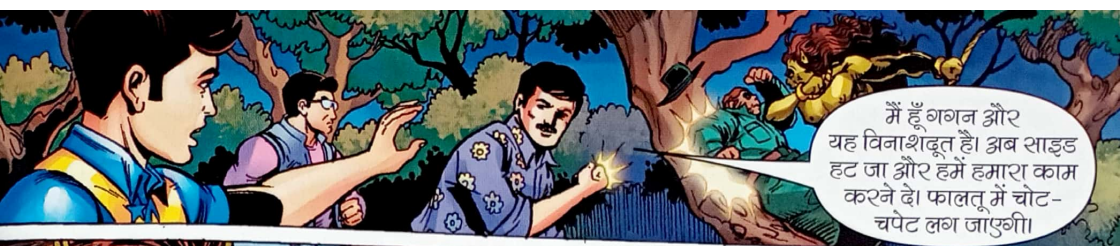
मैं हूँ गगन और
यह विनाशदूत है। अब साइड
हट जा और हमें हमारा काम
करने दे। फालतू में चोट-
चपेट लग जाएगी।
कुछ भी कर के नागराज को
ढूँढो बच्चे! उससे कहो कि कोबी उसे
ढूँढ रहा है, उसके ऊपर बहुत बड़ी
मुसीबत आने वाली...
सुनो तुम
शांत हो
जाओ।
मुझे बताओ
तुम कौन हो और
नागराज को क्यों
ढूँढ रहे हो।
फिलहाल तो
सबसे बड़ी मुसीबत
तुझ पर टूटने वाली है,
माँटी के रूप मे...
अरे तुम लोग
दिमाग से पैदल हो
क्या! उसे बोलने का
मौका तो दो।
मैं भी इसे आदमखोर समझ कर
इससे भिड़ गया था पर मुझे लग रहा
है कि हमसे कुछ गलती हुई है।
गलती हमसे
नहीं तुमसे हुई है बच्चे
कि तुम बड़ों के काम में
टाग अड़ा रहे हो।
एक मिनट! लड़के की
बात सुन लेने में कोई
बुराई नही...
इसके दांत और
नाखूनों की तरफ
ध्यान से देखो।
यह असंभव है कि चीर
फाड़ करने वाले के दांतों
और पंजों पर खून का
एक धब्बा ना हो।
बच्चे की
बात में दम
तो है।

जमीन पर बने इन पंजों के निशानों को ध्यान से देखो!
यहाँ दो अलग-अलग जोड़ी पाँव के निशान हैं जिनमें से एक कोबी के हैं।
दूसरे खून से सने हुए हैं जोकि उस असली आदमखोर के हैं जिसकी हमें तलाश है।
ये लड़का तो कम्प्यूटर से भी तेज दिमाग वाला चौधरी निकला।
अरे! इस जूपिटर सर्कस के लाल को छोड़ो और इधर ध्यान दो वर्ना यह माँटी को जूपिटर ग्रह पर पहुँचा कर मानेगा।
सुन प्यारे कोबी भाई! तू शांत हो जा, हम सब एक ही टीम के हैं...
बेकार की बकवास छोड़ो और नागराज को बुलाओ, यह श्राप मुझे अशक्त कर रहा है। मैं खुद नागराज तक नहीं पहुँच सकता।
नागराज! उससे तो हम तूतन खामन वाले कांड के बाद से नहीं मिले।
जानने के लिए पढ़ें नरक नाशक नागराज के पूर्व प्रकाशित कॉमिक्स मकबरा व तक्षक।
हम तुम्हारी मदद तब तक नहीं कर सकते कोबी जब तक तुम वेयरवुल्फ रूप में हो।
इससे पहले कि तुम दोबारा वेयरवुल्फ बनो, सबसे पहले हमें तुम्हारे वेयरवुल्फ वाले रूप को काबू में करने का उपाए सोचना होगा।

इग्जैम में आने वाले ये सारे सवाल हमें पहले से पता हैं बच्चे।
बस हम इनका जवाब नहीं जानते, तुम्हारे पास जवाब हो तो बात करो।
साथ ही हमें उस आदमखोर दरिंदे को भी नहीं भूलना चाहिए जोकि इन जंगलों में खुला घूम रहा है।
जवाब तो नहीं है, पर मैं चीटिंग करने की सोच रहा हूँ। मेरे पास एक प्लान है।
इंसानी मांस और खून म्म्म कितना स्वादिष्ट!
आ... आप!!
हाँ मैं कमीने! तूने गढ़ का कानून तोड़ा है, राइनो तू इसकी गर्दन तोड़ दे!
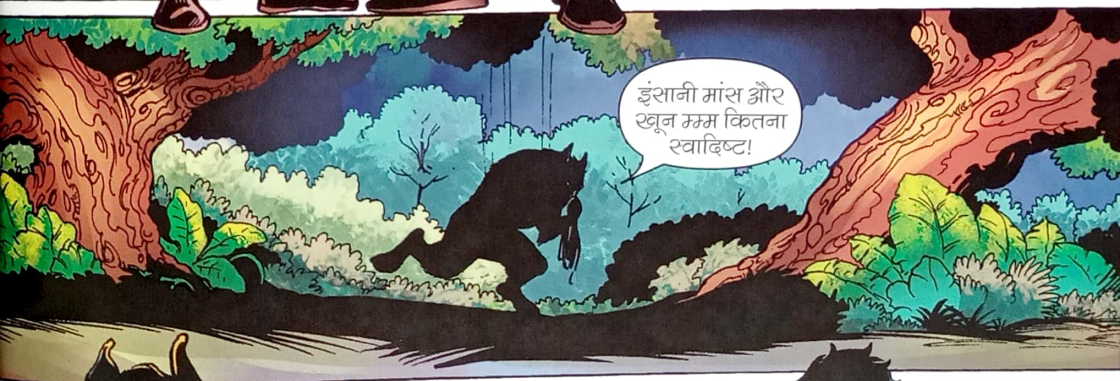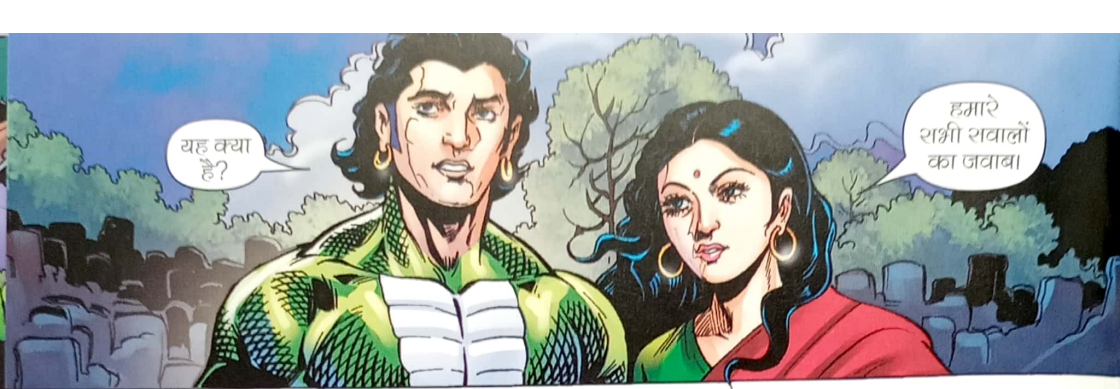
यह क्या है?
हमारे सभी सवालों का जवाब।
महाप्रेत अंतहीन।
यह हम क्या कर रहे हैं नगीना? मंदिरों की खाक छानते हुए अब हम भूत-प्रेत तक आ पहुँचे हैं... इस से हमें क्या मिलेगा?
मेरी बात का यकीन करो नागराज। मैंने इस अंतहीन की शक्ति का नमूना देखा है।
अघोरी के वेश में आया वह रहस्यमयी इच्छाधारी नाग सही था। यूँ समझो बाबा भोलेनाथ ने ही हमें ये रास्ता दिखाया है।
!?
करना क्या है?
यह तो मुझे भी नहीं पता। बस जो करना बहुत संभल कर करना। इसकी ठंडी आग ने मुझे जो आत्मिक यातना दी...
...वह नरक के समान थी।

नियति ने ब्रह्मांड की दो सर्वशक्तिशाली महाशक्तियों को आमने सामने कर दिया था।
नरक शब्द मेरे अस्तित्व के साथ यूँ जुड़ा है नगीना कि दुनिया भी नागराज पुकारने से पहले नरक नाशक कहती है।
नरक की ठंडी आग का धारक और नरक नाशक दोनो आमने-सामने थे।
हर्र्र्र... हीही...हाहा ...हर्र्र
अंततः तुझे अंतहीन के पास आना ही पड़ा राजनाग परंतु तेरे प्रश्नों के उत्तर अंतहीन से नहीं एन्थोनी से प्राप्त होंगे।
एन्थोनी गोंजलवेज।
पहली बात, तुमने मेरा नाम उल्टा लिया है। दूसरी बात तुमने बाकी जो भी बका मेरी कुछ समझ नहीं आया।
हर्र्र्र... अभी समझ जाओगे राजनाग।

दोनों महाशक्ति गणों को जैसे पहले ही एक-दूसरे की शक्ति का अंदाजा था।
और यह ब्रह्मांड का नियम है कि एक महाशक्ति गण सदैव दूसरे की शक्तियों को चुनौती देता है।
परंतु सशरीर नागराज अशरीर अंतहीन की आत्मा का मुकाबला कैसे करेगा?

इस प्रश्न का उत्तर शायद अफ्रीका के जंगलों के बेताज बादशाह, सम्राट थोडाँगा के पास था।
जी हाँ दोस्तों! विश्व आतंकवाद का दुश्मन, संसार से अपराध के नरक का नाश करने वाला नरक नाशक नागराज अपनी जान बचाने के लिए किसी चूहे की तरह बिल में जा छुपा। खूनी कबीले की नरभक्षी आत्माओं का गुबार वहाँ से जा चुका था।
"शायद अपने अंत क्षणों में अपने इष्ट को याद कर रहा था केंचुआ। अगर उसका कोई इष्ट था तो!"
हे बाबा गोरखनाथ। क्या यह मेरा अंत काल है?
"होश साथ छोड़ गए उसके, बस साँसों का साथ छोड़ना बाकी था। पता है दोस्तों जीवन सबसे नागवार कब लगता है।"
"जब सफलता आपके हाथ में आ जाए और फिर रेत की तरह फिसल जाए। नागराज की मौत की मेरी सफलता को रेत बनाने जाने कहां से प्रकट हुआ वह भगवाधारी सन्यासी।"
जागो वत्स, आँखें खोलो...

"जाने क्या जादू किया उस सन के जैसे सफेद बाल-दाढ़ी-मूँछ वाले सन्यासी ने, जिसके चेहरे पर सूर्य का तेज था। मेरा मरता दुश्मन जिंदा कर दिया कमबख्त ने।"
आह! बाबा आप!
चिंता मत करो वत्स। इन तुच्छ नारकीय शक्तियों में इतना सामर्थ्य नहीं कि नरक नाशक का नाश कर सके...
लेकिन बाबा। शारीरिक और अतिमानविय शक्तियों का मुकाबला किया जा सकता है पर अशरीर नरभक्षी आत्माओं का मुकाबला मैं कैसे करूँगा?
अपराध और आतंकवाद के नरक का नाश करने के अपने अंतहीन सफर का तुम्हारा यह प्रारम्भिक चरण है, नागराज। अभी तुम अपनी असीम शक्तियों से पूर्णतः परिचित नहीं हो और तुम्हारी यह शक्तियाँ इतनी अथाह हैं कि इनसे ना एक बार में परिचित हुआ जा सकता है...
...और ना ही तुम अपनी अथाह शक्तियों का वरण एवं नियंत्रण एक बार में कर पाओगे। फिलहाल, शरीर में वास करने वाली असीम ऊर्जा रूपी अनश्वर आत्मा की शक्तियों का प्रयोग तुम्हें सीखना होगा नागराज।
वह कैसे बाबा?
उसके लिए तुम्हें कोबरा घाटी जाना होगा वत्स। वहाँ महर्षि ज्वालानाथ ही तुम्हारी सहायता कर सकते हैं...
मैं कोबरा घाटी कैसे पहुँचूंगा बाबा?

"यहाँ से पाँच हजार मील दूर, दक्षिण दिशा में एक गुप्त द्वीप पर ज्वालामुखी के अंदर स्थित है कोबरा घाटी।"
ओह! बाबा गोरखनाथ के बताए स्थान पर तो कुल छः ज्वालामुखी स्थित हैं...
एक ज्वालामुखी से आग का लावा निकल रहा है।
दूसरे से पानी की अतितीव्र फुहारें...
तीसरे से वायु के शक्तिशाली चक्रवात।
चौथे से मिट्टी और विकराल चट्टानें निकल कर हमला कर रही हैं..
पाँचवे के ऊपर आसमान जैसे विचित्र बादल छाए हैं, जिनके पार सौर मंडल दिख रहा है और इससे उल्काएँ निकल कर मेरी तरफ आ रही हैं...
यदि मैं गलत नहीं हूँ तो ये पाँचों ज्वालामुखी पंच महाभूत के द्योतक है...

यह छठा ज्वालामुखी शांत है।
यकीनन इसके अंदर ही मुझे कोबरा घाटी और महर्षि ज्वालानाथ मिलेंगे।
ओह! यह सिर्फ दिखने में शांत था।
पर अब शक की गुंजाइश नहीं कि मेरी मंजिल इसके अंदर है।
इसके विशालकाय मुख में हजारों-लाखों सर्प है...
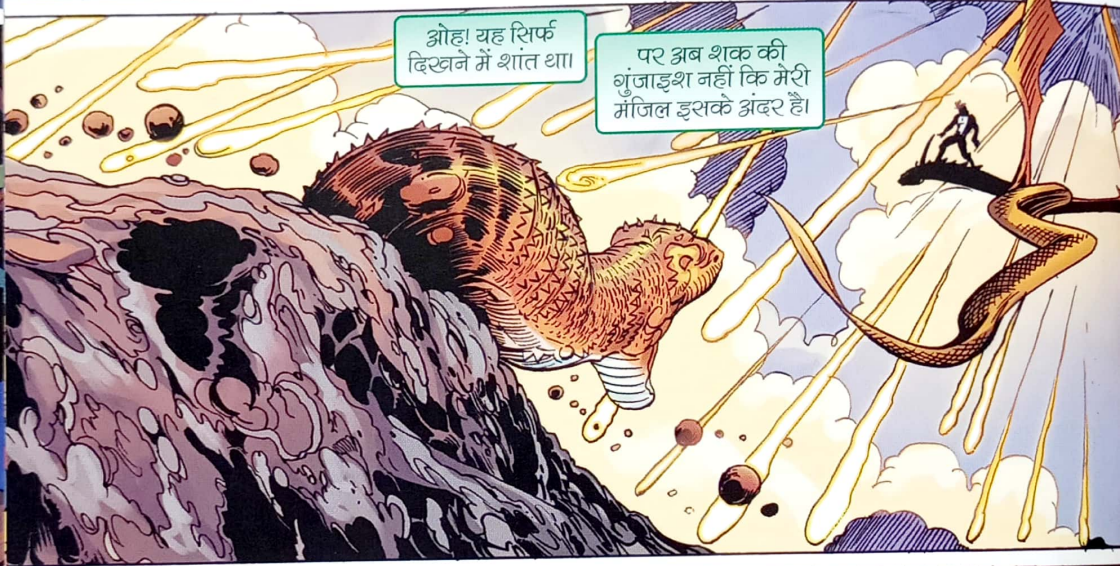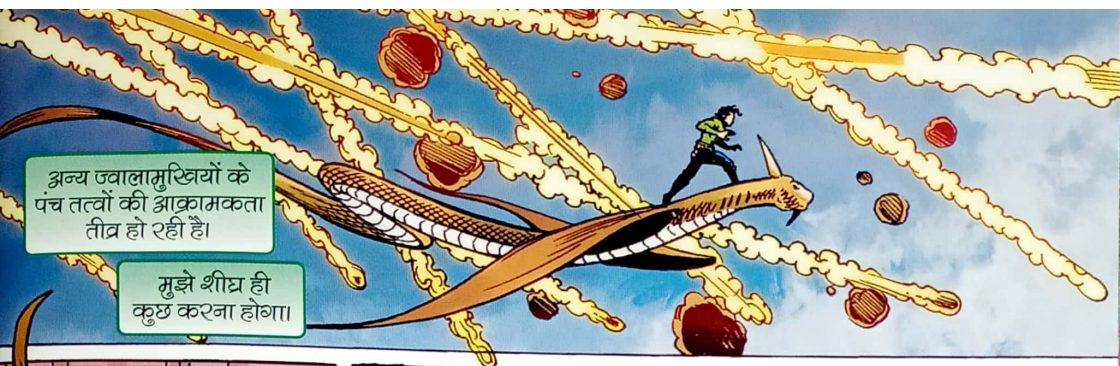
अन्य ज्वालामुखियों के पंच तत्वों की आक्रामकता तीव्र हो रही है।
मुझे शीघ्र ही कुछ करना होगा।
जय बाबा गोरखनाथ!
इसका मुँह वास्तव में एक विशालकाय गार है।
संसार के सबसे जहरीले, दुर्लभ और भयंकर सर्पों से भरी हुई विशालकाय गार!
तुम लाख जहरीले सही पर मुझसे पार ना पाओगे।
तुम्हारी जान लेने का मेरा कोई इरादा नहीं मित्रों, मुझे सिर्फ महर्षि ज्वालानाथ के दर्शन करने है...

महर्षि ज्वालानाथ समाधि में लीन हैं...
उनसे मिलने की आज्ञा किसी को नहीं... वापस लौट जाओ युवक।
निवेदन को निर्बलता समझने की भूल ना करो मित्र। यह अवसर दोबारा ना मिलेगा।
अवसर तुम्हें भी नहीं मिलेगा युवक।
प्रहरी का अतिआत्मविश्वास गलत भी नहीं था। भला उस दुर्गम स्थान पर किसी इंसान के आने और उसके जीवित रह जाने की कल्पना भी कौन कर सकता था!
लेकिन वो इंसान नहीं था, वह था विलक्षण नागमानव नागराज।
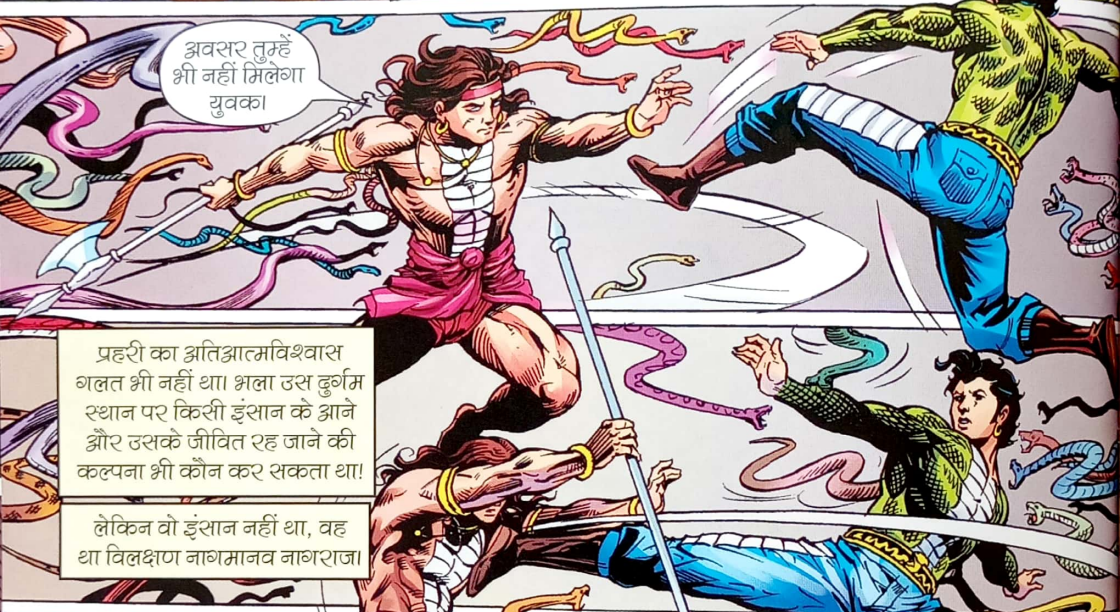
बस बहुत हुआ! बंद करो यह द्वंद्व।
तुमने खुद को इस स्थान तक पहुँचने योग्य सिद्ध कर लिया है।
महर्षि तक पहुँचने योग्य तुम हो या नहीं यह तय होना शेष है। महर्षि तक पहुँचने का मार्ग इस दरार से जाता है।
मेरा एक वार इस दरार को आर-पार जाने लायक बड़ा कर देगा। ओह!
इसपर तो कोई प्रभाव नहीं पड़ा।
असम्भव! ध्वंसक सर्पों का भी असर नहीं हुआ।
त्रिसर्पी भी बेअसर सिद्ध हुई।
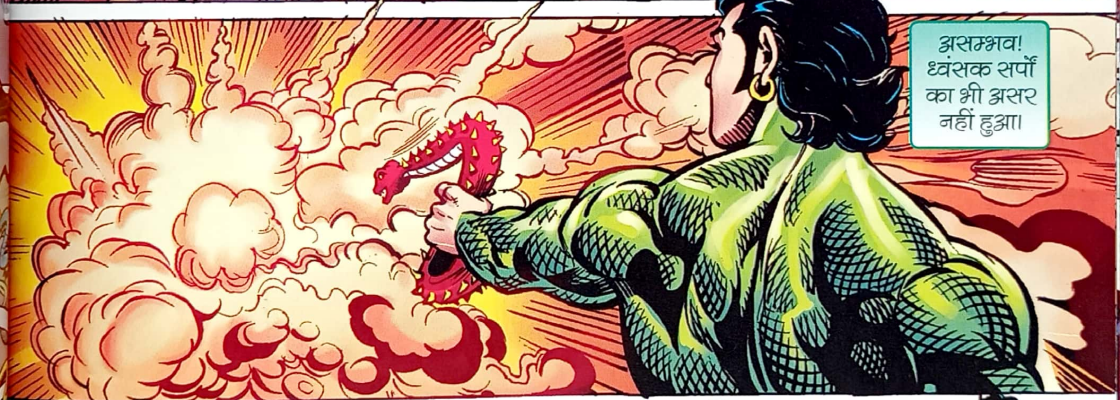
दरार इतनी छोटी है कि इससे नागरूप में भी नहीं निकला जा सकता।
अब तो बस एक ही रास्ता शेष बचता है...
जहां बल काम ना आए वहाँ ध्यान काम आता है।
मुझे इस दरार के पार ध्यान केंद्रित करना होगा...
सम्पूर्ण इच्छाशक्ति लगाने से शायद कोई चमत्कार हो जाए।
ॐ नमः शिवाय...
जय गुरु गोरखनाथ।
तप और ध्यान वास्तव में वह चमत्कार हैं जिनके आगे तो वाकई परमेश्वर भी नतमस्तक हैं।
और परमेश्वर प्रसन्न होते हैं तो चमत्कार होते हैं...
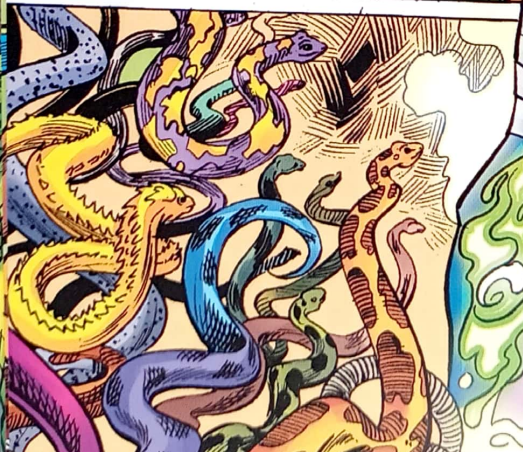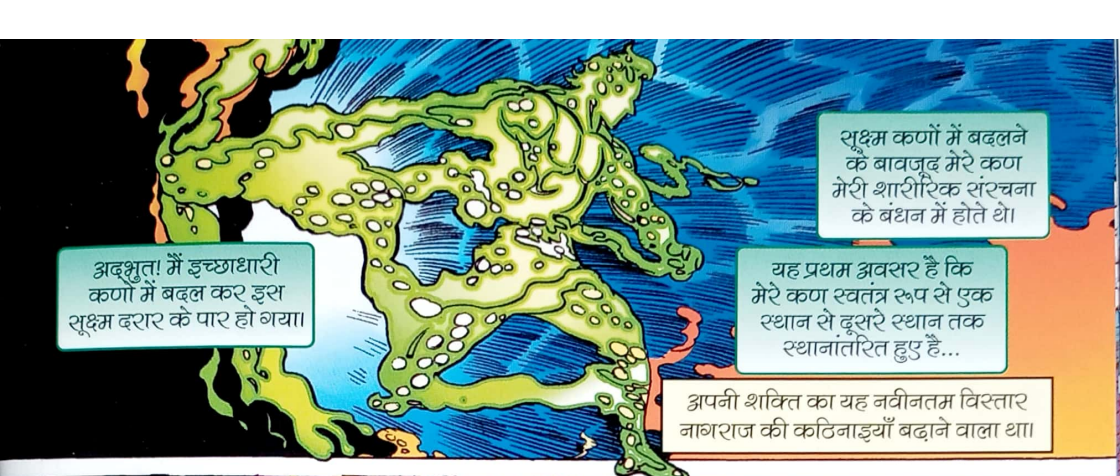
सूक्ष्म कणों में बदलने के बावजूद मेरे कण मेरी शारीरिक संरचना के बंधन में होते थे।
अद्भुत! मैं इच्छाधारी कणों में बदल कर इस सूक्ष्म दरार के पार हो गया।
यह प्रथम अवसर है कि मेरे कण स्वतंत्र रूप से एक स्थान से दूसरे स्थान तक स्थानांतरित हुए है...
अपनी शक्ति का यह नवीनतम विस्तार नागराज की कठिनाइयाँ बढ़ाने वाला था।
उफ! यह क्या हो रहा है।
मेरे कण अभी मेरी सम्पूर्ण शारीरिक संरचना के बंधन में नहीं आए हैं और एक तीव्र हवा का झोंका इन्हें खींच रहा है। ऐसे में मेरे सूक्ष्म कण बिखर गए तो मेरा अस्तित्व हमेशा के लिए मिट जाएगा।
हे भोलेनाथ! यह तो विशालकाय अजगर है जो अपनी श्वास से मेरे कणों को खींच रहा है।
ऐसे तो मैं कणों में विखंडित होकर इसका ग्रास बन जाऊँगा।
इतनी आसानी से नहीं।
मेरे सूक्ष्म कण यदि मेरी शारीरिक संरचना के बंधन से आजाद हैं तो इसका उपयोग मुझे...

...सूक्ष्म कणों की परत से इस विशालकाय अजगर को पूर्णतः ढकने के लिए करना होगा।
नागराज ने अपने वास्तविक स्वरूप में आना आरम्भ किया।
यह बेहद पीड़ादायक प्रक्रिया थी।
हूक! जय बाबा भोलेनाथ! जय बाबा गोरखनाथ!
नागराज के वास्तविक स्वरूप में आने पर विशाल-काय अजगर उसके जिस्म में समाहित हो चुका था।
परंतु परीक्षा अभी सम्पूर्ण ना हुई थी।
ओह! आगे लावा प्रपात है, इसे तैर कर पार नहीं किया जा सकता।
यहाँ तक कि छत से भी लावा झरने की तरह गिर रहा है, छत से रेंग कर जाना भी सम्भव नही...
यह इतना बड़ा है जिसे छलांग लगा कर भी पार नहीं किया जा सकता।

सर्परस्सी बांधकर आर-पार जाने की तरकीब भी काम ना आयी।
और उस अजूबे के चेहरे पर फिर वही भाव आए जिनके बाद वो नामुमकिन के ना को नागराज में बदल देता है।
सर्परस्सी के सहारे उसने एक जोरदार छलांग ली। कलाबाजी खाता हुआ उसका शरीर सीधे लावा प्रपात की ओर बढ़ा।

मौत रूपी लावे के छूने से क्षण के सौवें हिस्से पूर्व नागराज का शरीर स्वतंत्र सूक्ष्म कणों में परिवर्तित होकर लावे के आर-पार निकल गया।
आगे सुरंग खत्म हो रही है।
लगता है यही महर्षि ज्वालानाथ हैं... परंतु ये तो समाधि में लीन हैं... मुझे ना चाहते हुए भी इनकी समाधि भंग करनी होगी।
ठहरो! महर्षि की समाधि भंग करने की धृष्टता मत करना बालक।
यह क्या बला है?
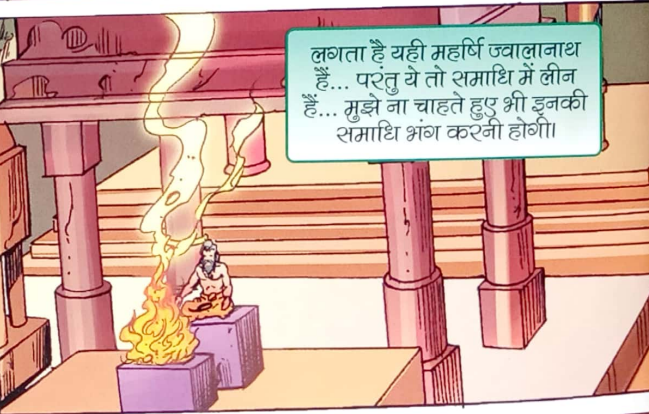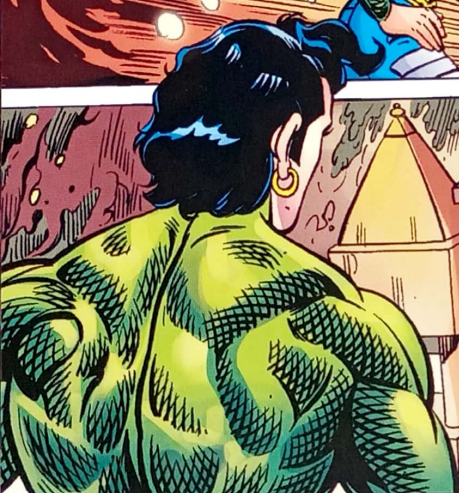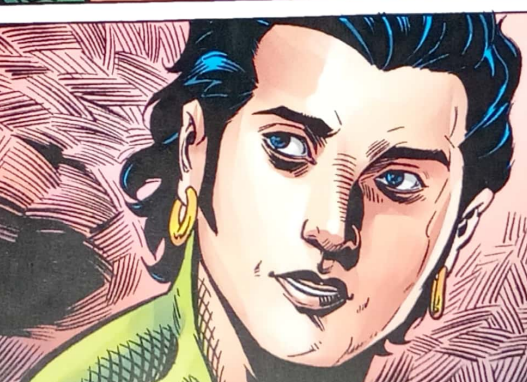
मैं हूँ महर्षि ज्वालानाथ का रक्षक कोबराजा। मेरे रहते तू महर्षि तक नहीं पहुँच सकता बालक।
मेरे सेवक पन्नाग, दुर्सर्प, दंताक, घोड़ा पछाड़ घटोतविष, लोम्बू, कैक्टस कोबरा और वाइपर मेरे साथ मिलकर तुझे यम मार्ग दिखाए उससे पूर्व ही पलट जा।
ऐसी विलक्षण इच्छाधारी नाग प्रजातियाँ ना मैंने सुनी ना कभी देखी हैं... मैं इन्हें हानि नहीं पहुँचाना चाहता।
मेरा निवेदन है कि एक बार मेरी बात सुन लें... मेरा महर्षि ज्वालानाथ से मिलना मानवता के लिए अतिआवश्यक है।

तुम यहाँ से जीवित लौटने का अंतिम अवसर गँवा चुके हो बालक, अब मरने के लिए तैयार हो जाओ।
ओह! सारे के सारे एक साथ हमला कर रहे हैं...
यह दुर्सर्प तो बूमरेंग की तरह वार कर के हवा में वापस पलट कर दोबारा वार करने आ रहा है।
फचाक
महर्षि के रक्षक कुछ सुनने के मूड में नहीं थे।
और नरक नाशक अब और विनती करने के मूड में नहीं था।
इसके बाद नहीं आ पाएगा।
पन्नाग की मणि से इतनी तीव्र रौशनी प्रस्फुटित हो रही है जिसमें कुछ भी देख पाना असम्भव है।
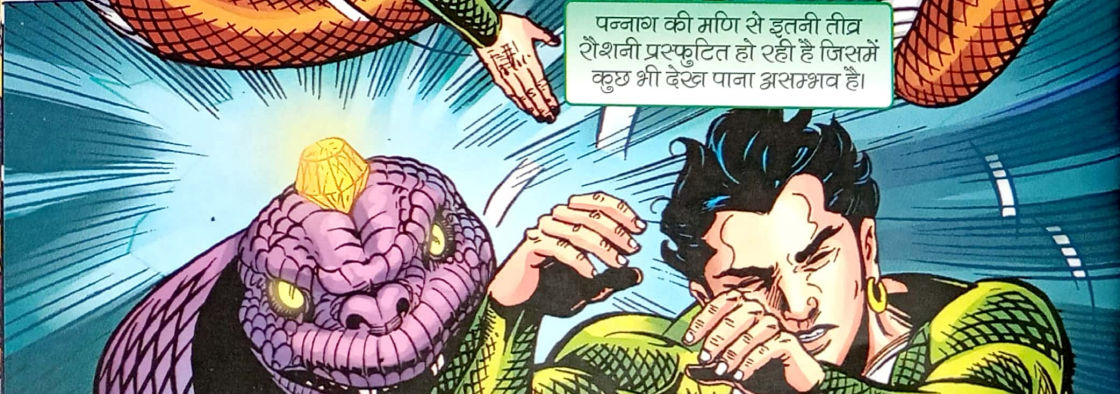
इसकी मणि सिर्फ चकाचौंध नहीं कर रही बल्कि मतिभ्रम भी पैदा कर रही है।
नागराज के मतिभ्रम का फायदा उठा कर कोबराज और उसके सप्तसर्प एक-साथ टूट पड़े उसपर।
इनसे मुकाबला करने के लिए सबसे पहले...
...मतिभ्रम स्रोत को नष्ट करना होगा।
मेरा सोचना सही था, पन्नाग आंखों से जो देखता है उसे इसकी मस्तक मणि मतिभ्रमित करती है। बिना आँखों के इसकी मणि काम नहीं करेगी।
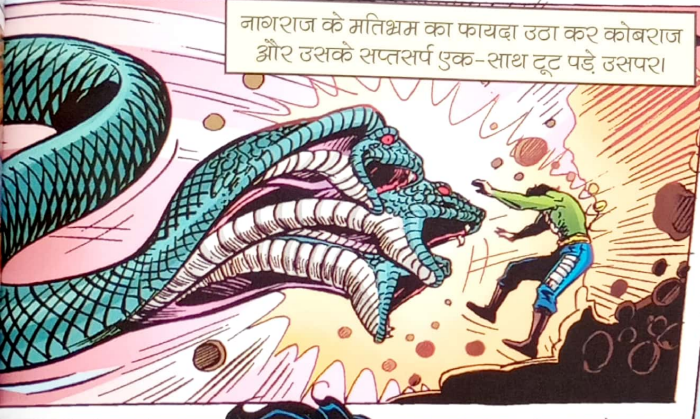
बहुत फुर्तीले हो तुम दोनो... देखें लोहा लोहे को कैसे काटता है।
मेरे खुर के वार से वज्र भी खील-खील हो जाता है लड़के।
अब इतनी ढिठाई से अपनी तारीफ कर रहे हो तो झूठ थोड़े ही होगा।
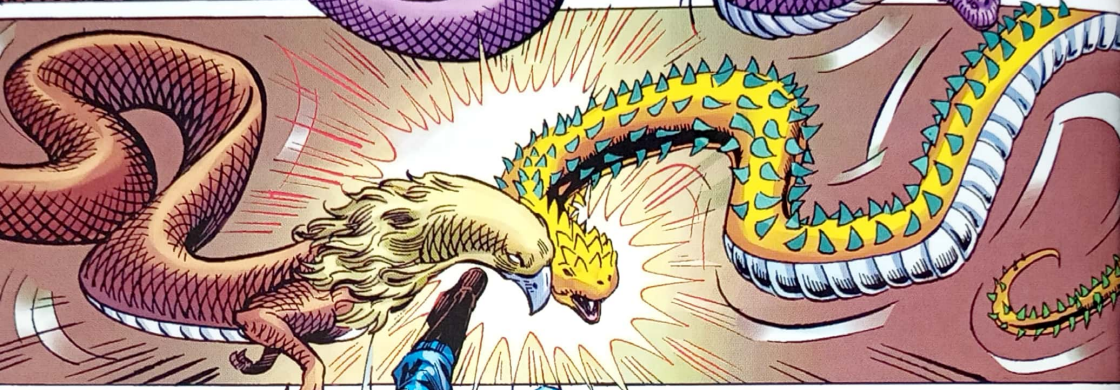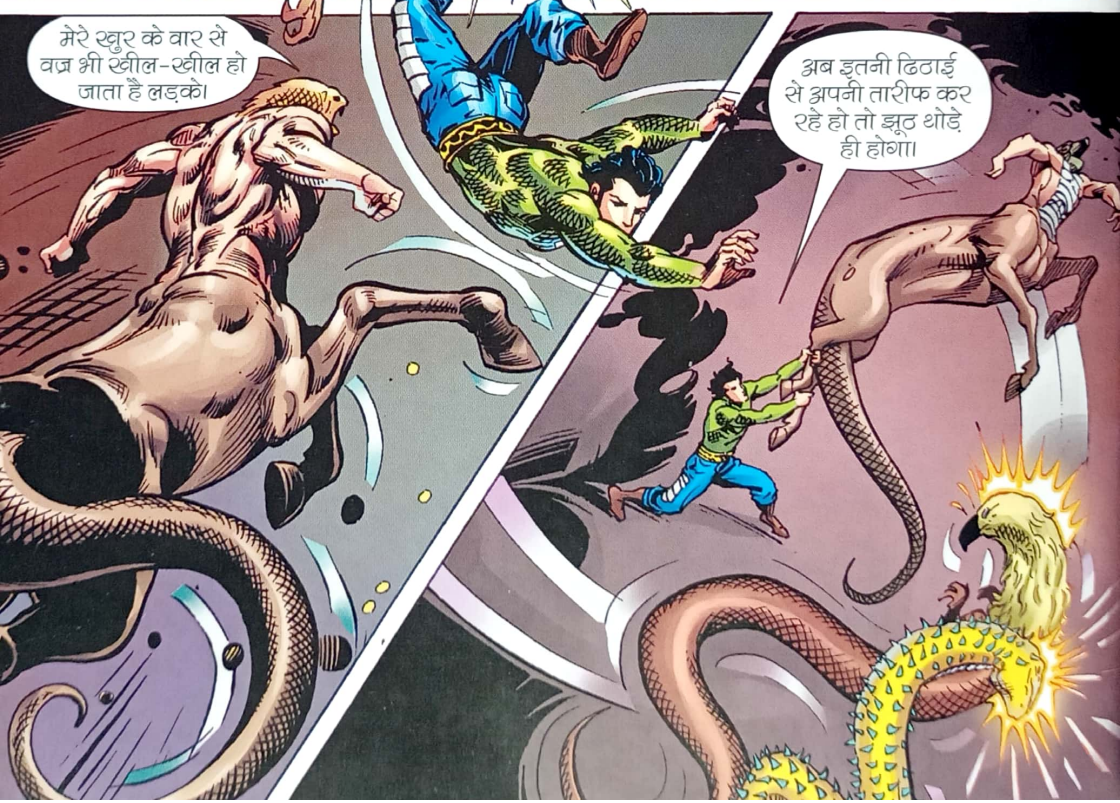
तुम्हारे बदबूदार दांत तुम्हारी तारीफ खुद कर रहे हैं तुम जहमत मत उठाओ।
आश्चर्य! जाने किस चीज से बने हैं दंताक के दांत, इसका पूरा जिस्म मुझे काट कर मोम की तरह पिघल गया पर यह दांत ना पिघले।
अब यह इस घोड़ापछाड़ को पछाड़ने में काम आएँगे।
मुझे अफसोस है कि मुझे ऐसे दुर्लभ और अद्भुत शक्तियों वाले इच्छाधारी नागों को खत्म करना पड़ रहा है।

दुःख मुझे भी है अपने साथियों की मौत का, परंतु मैं शोक तुझे मारने के बाद मनाऊँगा।
ओह! इस वाइपर को तो भूल ही गया था मैं... तो इसमें अदृश्य होने की शक्ति है।
यह अदृश्य भी है और बिजली की तरह फुर्तीला भी।
जब तक इसकी स्थिति का अंदाजा लगा कर मैं इस पर वार कर रहा हूँ यह अपना स्थान बदल कर मुझ पर वार कर रहा है।
इससे निपटने के लिए मुझे अपने चारों ओर विष फुफकार का गुबार तैयार करना होगा।
गाढ़ी विष फुफकार से ना यह अदृश्य रह पाएगा और ना ही साँस ले पाएगा।
फूँ
उफ्फ-खूँ-खूँ-खौं
मेरे लिए यह एक मौका पर्याप्त है।
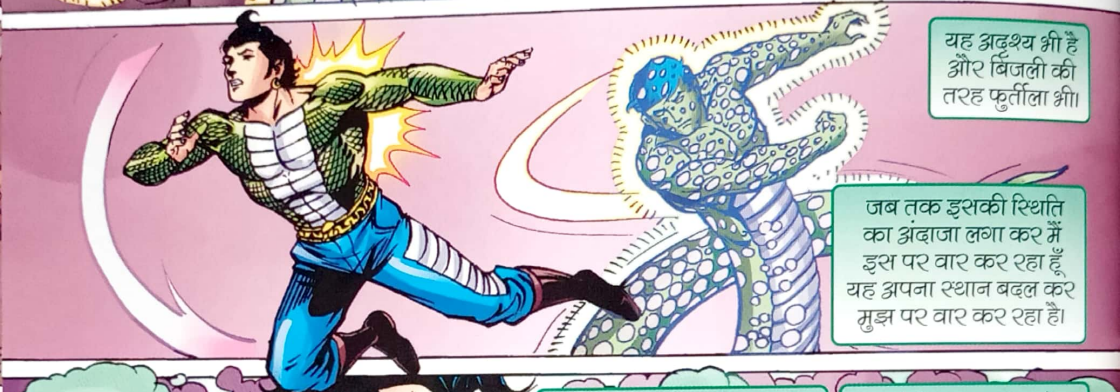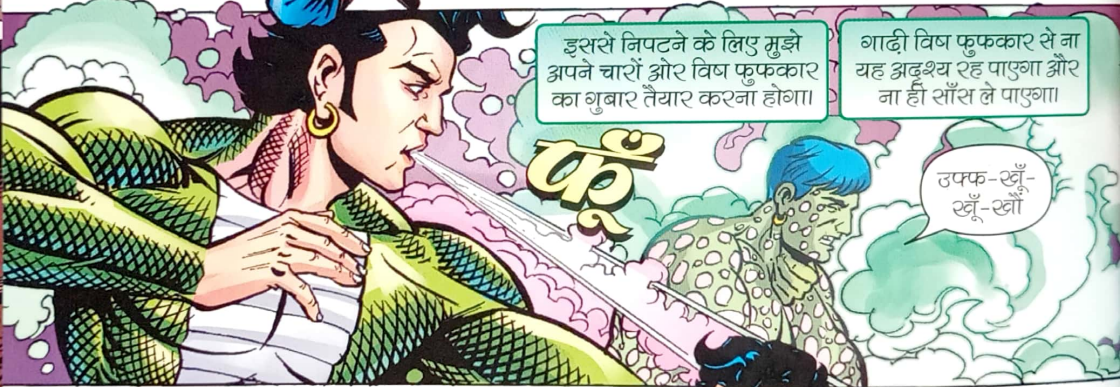
सप्तसर्पों को समाप्त करने वाला कोई मामूली बालक नहीं हो सकता। कौन है तू युवक?
मैं हूँ रुद्र का भक्त, बाबा गोरखनाथ का शिष्य, विलक्षण नाग मानव...
...नरक नाशक नागराज!

कोबराज की कुंडली से शत्रु कभी जीवित बाहर नहीं आता नागराज।
तुम्हारा शत्रु कभी नागराज नहीं हुआ कोबराज। तुम वाकिफ नहीं हो नागराज के उस रूप से जिसे दुनिया कहती है...
...इच्छाधारी नागराज!!
तेरी इह लीला समाप्त कोबराज।

तुम सबकी मौत का अफसोस रहेगा।
क्या वाकई तुम्हें इनकी मृत्यु का शोक है वत्स?
प्रणाम महर्षि! मेरा उद्देश्य सिर्फ आपसे अपने प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करना था।
मैं अकारण किसी की जान लेने में विश्वास नहीं रखता।
मेरे चेतावनी देने पर भी यदि यह मुझे रोकने की कोशिश ना करते तो यूँ अपनी जान ना गँवाते।
इसका तात्पर्य यदि तुम्हें इनको पुनर्जीवन देने का अवसर मिले तो तुम इन्हें जीवन दान दोगे?
अवश्य! मेरी इनसे कोई निजी शत्रुता नहीं...
मैं जानता हूँ तुम यहाँ क्यों आए हो। मैं तुम्हें एक विकल्प देता हूँ नागराज, चयन तुम्हें करना है।
तुम्हें अपनी समस्या के निदान और इनके जीवनदान में से किसी एक को चुनना होगा नागराज।
हे बाबा गोरखनाथ! यह महर्षि ने किस दुविधा में डाल दिया।
मेरे चेतावनी देने पर भी मुझसे लड़ कर मृत्यु प्राप्त करना इनका चयन था महर्षि...

... परंतु यदि इन्हें मेरे निर्णय से जीवन दान मिल सकता है तो मैं इनका जीवन चुनूँगा महर्षि।
तथास्तु!
यह तुम्हारी परीक्षा थी जिसमें तुम उत्तीर्ण हुए।
तुमने कोबराज और सप्तसर्पों को परास्त अवश्य किया था परंतु उनकी मृत्यु हमारा मायाजाल थी।
वह देखो, सभी दुर्लभ सर्प सकुशल हैं...
ओह! तुम सभी को सकुशल देखकर सुकून मिला मित्रों...
धन्यवाद नागराज! तुम अजेय हो।
तुम्हारी परीक्षा आवश्यक थी नागराज, ताकि यह तय किया जा सके कि जिन शक्तियों को तुम साधने जा रहे हो तुम उनके योग्य हो या नहीं...

आप किन शक्तियों की बात कर रहे हैं, महर्षि?
अशरीरी शत्रु से युद्ध करने की शक्ति वत्स।
पंच तत्वों से बना हुआ हमारा यह शरीर वास्तव में एक ऊर्जा पात्र है जिसका उद्देश्य आत्मा रूपी ऊर्जा को संचित करना है।
यह ऊर्जा सात्विक भी होती है और तामसिक भी। तुम्हारा सामना अशरीर तामसिक ऊर्जा से है जिसे परास्त करने हेतु तुम्हें...
...शरीर से आत्मा को पृथक करने की कला सीखनी होगी।
बल्कि सीखनी होगी कहना गलत होगा, क्योंकि यह कला तुम पहले से जानते हो।
जब भी तुम्हारा शरीर इच्छाधारी सूक्ष्म कणों में बदलता है तुम्हारी आत्मा शरीर से आजाद होती है। यह आत्मा ही वह ऊर्जा है जो तुम्हारे कणों को बांधे रखती है।
धप्प!
यानी मुझे बिना अपने शरीर को सूक्ष्म इच्छाधारी कणों में बदले भी अपनी आत्मा को शरीर से अलग करने की विधा सीखनी होगी।

बिल्कुल वत्स, और यह विधा मैं तुम्हें सिखाऊँगा।
यह प्रथम अवसर नहीं था जब शिष्य के रूप में नागराज ने अपनी योग्यता सिद्ध की थी। जल्द ही वह इस कला में सिद्धहस्त हो चुका था।
विदा लेने का समय आ चुका था।
आज्ञा दें गुरुदेव।
जाने से पूर्व कुछ और भी है जो हम तुम्हें सौंपना चाहते है...
"तुम्हारे संसार के नरक को नाश करने के सफर में यह सप्तसर्प अब तुम्हारे सहयोगी होंगे।"
यह मेरा सौभाग्य है। नागराज की सर्प सेना में स्वागत है मित्रों...

इस तरह वह कमबख्त पहले से ज्यादा शक्तिशाली हो कर निकल पड़ा मेरे नरभक्षी खूनी कबीले की आत्माओं का सामना करने।
अगर गुस्ताखी माफ हो तो क्या मैं एक प्रश्न पूछ सकती हूँ मेरे सम्राट?
हेहेहे...आपकी तो सारी गुस्ताखियाँ माफ हैं... भला गोरी-गोरी जापानी गुड़िया को सवाल पूछने से कैसे रोका जा सकता है।
इन सभी घटनाओं के समय आप या जुलु नागराज के साथ नहीं थे फिर आपको इनकी जानकारी कैसे हुई।
वाह! कितना समझदारी भरा सवाल पूछा है आपने। मान गए!
हरामखोर कहीं का। यही सवाल अगर हमने पूछ लिया होता तो मुंडी मरोड़ रहा होता साला!
औरतजात चीज ही ऐसी है भई, पागल कुत्ता भी पालतू टॉमी बन कर दुम हिलाने लगता है।
और जरा सोचो, इसके पास मिस किलर का वूडू पुतला भी है...हिहिही।
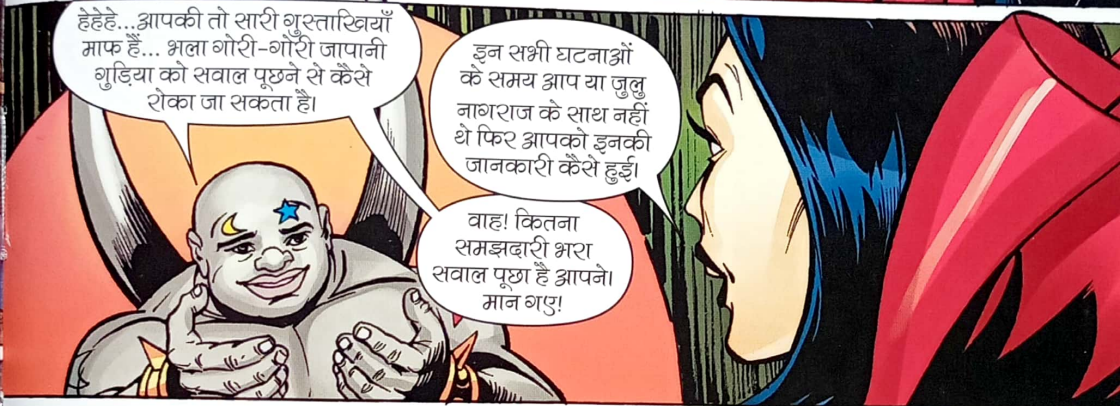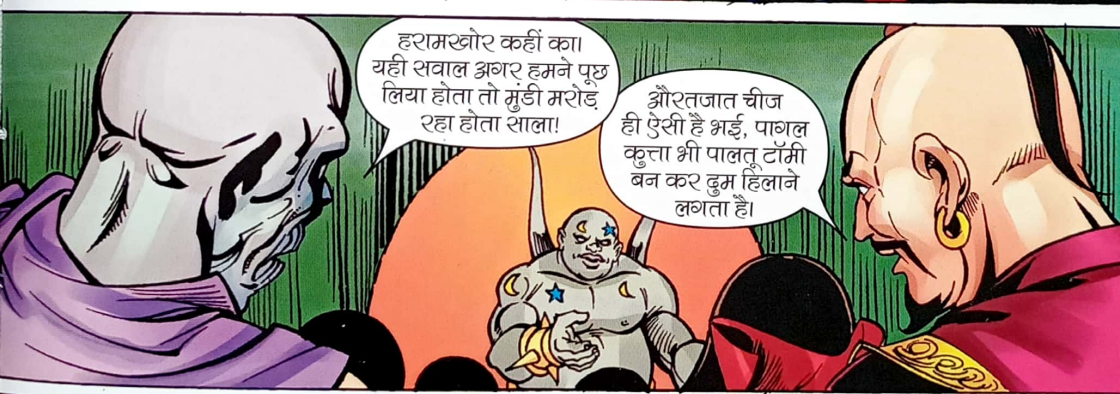
वूडू शक्ति के बहुत रूप होते हैं साथियो...
नागराज के जिस्म में वास करने वाले असंख्य साँपों में से एक को मेरे गुलाम जुलु ने अपने वूडू से अभिमंत्रित कर दिया था।
खूनी कबीले से लड़ाई के दौरान उस साँप की केंचुली जुलु के हाथ लगी जिसका उसने वूडू पुतला बनाने में प्रयोग किया।
उस नाग के जरिए जुलु वहाँ तक का वृतांत देखने में सफल हो गया पर सप्तसर्पों के नागराज के शरीर में प्रवेश करते ही वूडू टूट गया, शायद उनमें से किसी एक की शक्ति के कारण।
"पर कुछ ही देर में नागराज कहर के बादल की तरह नरभक्षी आत्माओं के कबीले के ऊपर मंडरा रहा था।"

नागराज! हमें पूरा यकीन था तुम हमें बचाने जरूर आओगे दोस्त!
अपने कबीले वालों को आजाद कराओ। मैं इन नरभक्षी आत्माओं से निपटता हूँ।
"अपने शत्रु को देखते ही नरभक्षी आत्माएँ उस पर टूट पड़ीं...।"
"वैसे आदेश मेरा था। दरअसल मैं नागराज की उस नयी शक्ति का नमूना देखना चाहता था।"

"वास्तव में नागराज था तो एक हथियार ही जो कुछ समय पहले नीलामी में मेरे हाथ में आते-आते निकल गया था।'
"और अब वह हथियार... वह अद्वितीय, अचूक हथियार खुद चल कर मेरे पास आया था।''
"और इस बार मैं इस शानदार हथियार को किसी भी कीमत पर अपने हाथ से निकलने देने के मूड में नहीं था।''
"खूनी कबीले की नरभक्षी आत्माओं को खिलौने की तरह खत्म कर दिया था उसने।''
"लेकिन उस हथियार के हाथ मिली यह छोटी सी हार उसे मेरे हाथों का खिलौना बनाने की तरफ मेरा पहला बड़ा कदम थी।''
एक तरफ सम्राट थोडांगा नागराज से अपने टकराव का अगला अध्याय आरम्भ करने जा रहा था।
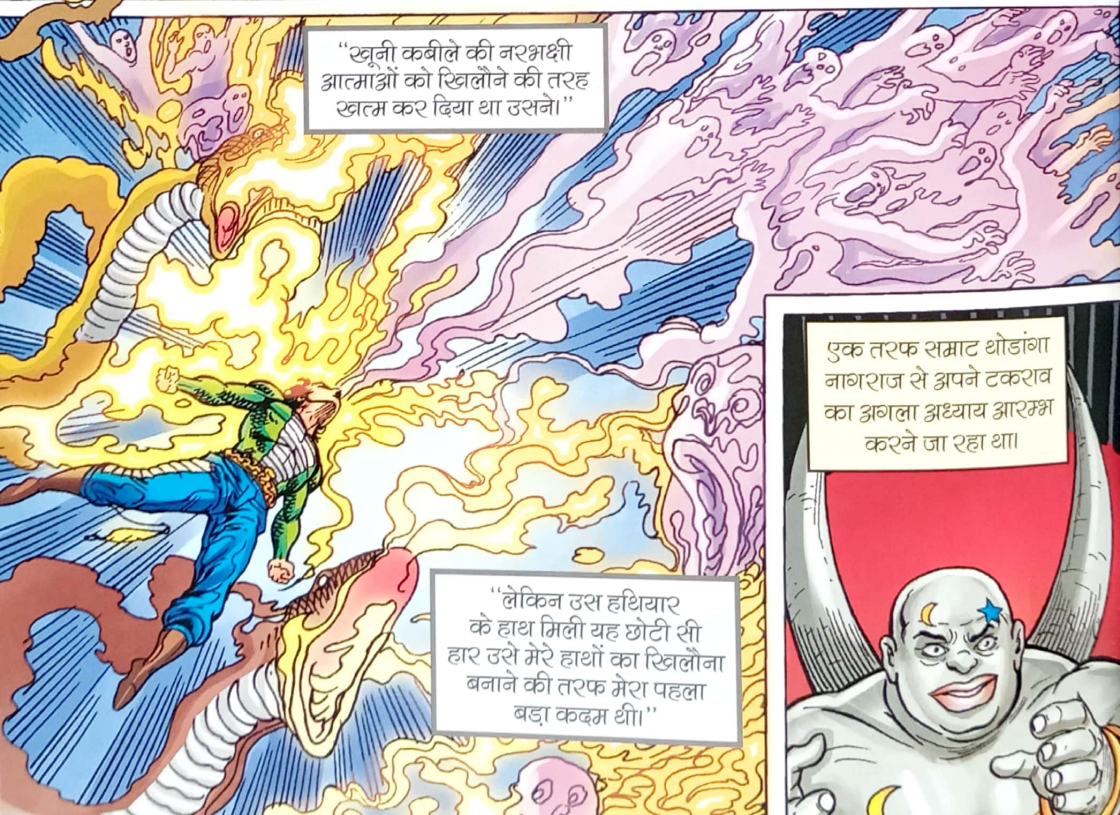
दूसरी तरफ नागराज के वर्तमान जीवन का नवीनतम अध्याय उसके आदिपर्व...यानी उसकी उत्पत्ति से होकर गुजरने वाला था।
तू आज भी उतना ही हठी है, राजनाग!
अद्भुत! नागराज की इस शक्ति के बारे में तो मुझे भी नहीं पता था।
आत्मा का जवाब आत्मा से देना आता है मुझे।
जवाब... **हाहाहा**... तुम्हारे पास जवाब नहीं हैं मेरे आदि मित्र। तुम्हारे पास सिर्फ सवाल होंगे।
और तुम्हारे सवाल शुरू होते हैं...अब!
आँखें खोलो और अपने सच को पहचानो राजनाग!
हे बाबा गोरखनाथ! यह कैसा मायाजाल है!

"और बताओ क्या नजर आ रहा है? उत्तर नजर आ रहा है या अस्तित्व के प्रश्न जन्म ले रहे हैं?"
यह महादेव मंदिर, यह सम्पूर्ण स्थान मुझे इतना जाना पहचाना क्यों प्रतीत हो रहा है जैसे इससे मेरा अटूट भावनात्मक सम्बन्ध हो।
जैसे मैं इस स्थान में ही जन्मा, पला, बढ़ा हूँ...
और मैं उसी पुरातन योद्धा के रूप में हूँ जिसका अक्स मैंने पानी में देखा था, एक दूसरे नाग योद्धा से लड़ते हुए।
अंतहीन इसे ही राजनाग बुला रहा है। क्या सम्बंध है मेरा राजनाग से?
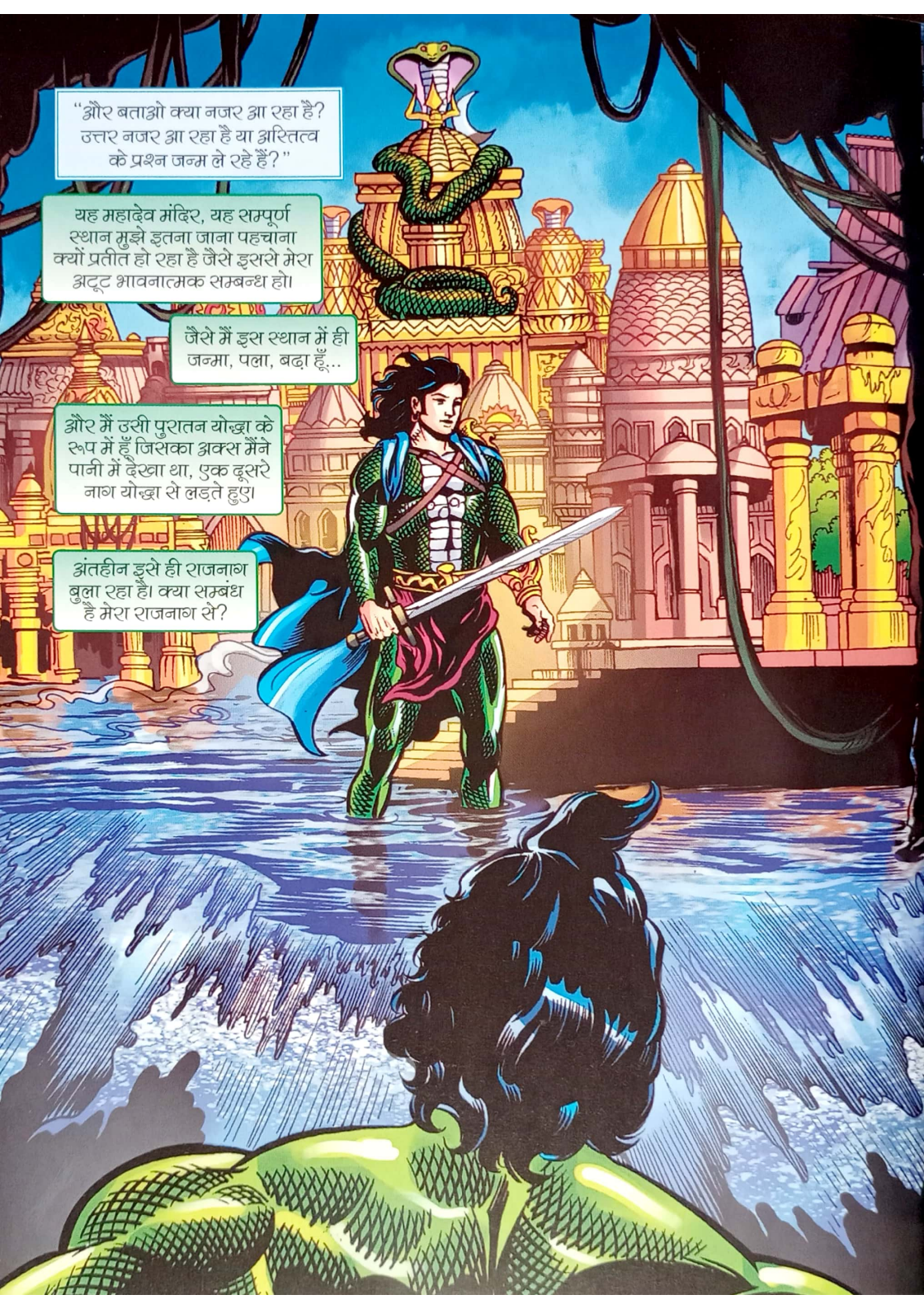
इस शिवलिंग के सही स्थान का प्रश्न ले कर ही मेरे पास आए हो ना राजनाग?
मेरे यानी राजनाग के हाथ में वही शिवलिंग है जिसे स्थापित करने के लिए मैं सही मंदिर की तलाश में भटक रहा हूँ।
"यह शिवलिंग वास्तव में इस मंदिर की ही नहीं, तुम्हारे अस्तित्व की भी कुंजी है राजनाग।"
ओह! यह शिवलिंग कुंजी है इस मंदिर की। यानी यह राजनाग मेरा पूर्वजन्म है? हे भोलेनाथ! क्या पहेली है यह?
"तुम्हारे अतीत में तुम्हारा स्वागत है राजनाग, जो तुम्हारा भविष्य निर्धारित करेगा।"
अब बताओ, उत्तर दोगे या प्रश्न करोगे?
जवाब तुम जानते हो अंतहीन। मैं प्रश्न करूँगा।
तुम्हारे हर प्रश्न का मैं उत्तर दूँगा परंतु मेरी एक शर्त है।

कैसी शर्त?
तुम्हें मेरा एक काम करना होगा।
तुम ठीक तो हो नागराज?
ह...हाँ!
यह नगीना को क्या हुआ है? यह इतनी देर से ऐसे अजीब बरताव क्यों कर रही है?
तुम कौन से काम की बात कर रहे थे अंतहीन?
यहाँ से छः कोस दूर दक्षिण दिशा में रूपनगर कब्रिस्तान है जहां ऐन्थोनी गोंसालवेज की कब्र है।
तुम्हें मुझे कंधे पर उठा कर उस कब्र तक ले जाना होगा और उस कब्र से कॉफिन निकालना होगा।
बदले में मैं तुम्हें तुम्हारे अस्तित्व का राज बताऊँगा।
यह क्या बेहूदा काम है! मैं यहाँ विक्रम बेताल खेलने नहीं आया, अंतहीन।
हम दोनों को ही अपना अस्तित्व चाहिए राजनाग।
तुम्हारे अस्तित्व से मैं तुम्हें परिचित करा सकता हूँ, और मेरा अस्तित्व रूप नगर कब्रिस्तान की उस कब्र में सोया हुआ है।
संधि में सदैव दोनो पक्षों के समान हित की बात होती है। तुम मेरी सहायता करो, मैं तुम्हारी करूँगा।

कुछ पल विचार करने के पश्चात नागराज ने अपना निर्णय सुनाया।
मुझे स्वीकार है।
मुझे यही उम्मीद थी। इस क्रिया के कुछ नियम हैं जिन्हें जानना और उनका पालन करना तुम्हारे लिए अतिआवश्यक है।
यह सच है कि मैं इस पीपल वृक्ष से बंधा हुआ हूँ और तुम्हारे अलावा कोई और मुझे मेरी कब्र तक नहीं ले जा सकता ना ही मैं स्वयं इस पेड़ से दूर जा सकता हूँ।
तुम्हें सुबह होने से पहले मुझे मेरी कब्र तक पहुँचाना होगा अन्यथा सुबह की पहली किरण के साथ मेरी आत्मा वापस इस पीपल में समा जाएगी और तुम्हें अगली रात की प्रतीक्षा करनी होगी।
तुम्हें मुझे पैदल लेकर जाना होगा तुम किसी भी साधन का उपयोग नहीं कर सकते।
दूसरी बात। तुम कब्र से मेरी डेड बॉडी निकालने तक मुझे अपने कंधे से नीचे नहीं उतार सकते।
मेरी आत्मा का सम्पर्क तुम्हारे शरीर से टूटा तो भी मेरी आत्मा वापस इस पीपल पर आ लटकेगी।
तीसरी बात, इस सफर पर तुम और मैं अकेले जाएँगे। हमारे साथ कोई नहीं होगा।
मुझे तो यह इसकी कोई चाल लगती है।
मैं रिस्क लेने को तैयार हूँ, नगीना।
मुझे तुम्हारी सभी शर्तें स्वीकार हैं, अंतहीन।
तो फिर चलो, वैसे भी रात अधिक शेष नहीं और सफर लम्बा है।

अपराध और आतंकवाद के नरक का नाश करने के अपने अंतहीन सफर पर निकला नरक नाशक एक दिन अंतहीन नामक महाप्रेत को कंधे पर उठा कर अपने अनजान अस्तित्व का सफर तय करेगा यह उसने सपने में भी नहीं सोचा था।
तुम्हारे पूर्वजन्म, तुम्हारे अस्तित्व की महगाथा शुरू होती है नागपर्व से।
नागपर्व?
हाँ! सहस्त्राब्दियों में एक बार पड़ने वाला इच्छाधारी नागों का ऐसा पवित्र पावन पर्व जिसमें नागों के राजा वासुकि की पूजा होती है।
यह कथा आरम्भ होती है सृष्टि के आरम्भ और सभ्यता के उत्थान के साथ संसार के सर्वप्रथम नागपर्व से।

"सृष्टि का महान आरम्भ, जब प्रजापति ब्रह्मा के आदेश पर महर्षि कश्यप अपनी पत्नियों के साथ धरती पर विभिन्न प्रजातियों की उत्पत्ति कर चुके थे।
"देवता स्वर्ग में स्थापित हो चुके थे और स्वर्ग का सेनापति था ढकमानघन धारी दितिपुत्र शिरोमणि योद्धा।"

"प्रजापति ब्रह्मा के कमंडलु की सृजन शक्ति से ब्रह्माशय की स्थापना हो चुकी थी और प्रथम परी रक्षक भोकाल का आगमन हो चुका था।
"धरती पर मानवों में महर्षि गोजो अपनी अखंड तपशक्ति से सप्त शक्तियों को धारण कर चुके थे।"

"धरती की चारों दिशाओं की रक्षा का भार दानवों पर था और दानवों का नेतृत्व था दनु पुत्र भीमकाय अडिग के हाथ में...
"अश्वलोक के नेतृत्व की बागडोर थी ताम्रा पुत्र अश्व सम्राट अश्वराज के कुशल हाथों में...
"इन सबके अतिरिक्त धरती पर कोई एक प्रजाति थी जो सृष्टि के लिए मानवों जितनी ही महत्वपूर्ण थी।"

"वह थी नागजाति।
"यह वह समय था जब मानव देवताओं के साथ-साथ नागों की भी पूजा किया करते थे।
"इच्छाधारी नागों का निवास धरती के नीचे नागलोक में था जहां मानवों का आना निषेध था। इच्छाधारी नागों की शक्तियाँ देवताओं जितनी प्रबल और कई की तो देवताओं से भी प्रचंड थी, यही कारण था कि इच्छाधारी नाग मानवों से पृथक होकर नागलोक में निवास करते थे।
"इच्छाधारी नागों की इन असीम शक्तियों के बावजूद उन्होंने कभी देवासुर संग्राम में हिस्सा नहीं लिया क्योंकि यदि ऐसा होता तो इच्छाधारी नाग जिस पक्ष के लिए युद्ध करते उस पक्ष को पराजित करना असम्भव हो जाता।"

"नागों के राजा थे स्वयं नागराज वासुकि जिन्हें महादेव अपने गले में धारण किए हुए थे।
"और नागलोक का नेतृत्व था नागलोक के सेनापति यानी तुम्हारे हाथों में, राजनाग! राजनाग के होते कभी किसी आक्रमणकारी का नागलोक की ओर वक्र दृष्टि करने का साहस ना हुआ। राजनाग और नागराज वासुकि की शक्ति खड्ग किसी भी शत्रु का संहार करने में सक्षम थे।
"परंतु राजनाग नहीं जानता था कि नियति ने उसके लिए आने वाले समय के आवरण में एक ऐसा शत्रु छुपा रखा था जिसकी मृत्यु राजनाग के पतन का कारण बनेगी।"
कहो संदेशवाहक! क्या समाचार लाए हो?
प्रणाम स्वीकार करें महाबली।
नागपर्व के उपलक्ष्य में महात्मन कालदूत नागद्वीप की राजकुमारी विसर्पी के स्वयंवर का आयोजन कर रहे है...
समस्त नागलोक से वीर-पराक्रमी नाग कुमारों को आमंत्रित किया गया है। आप भी सादर आमंत्रित हैं
हुम्म! राजकुमारी विसर्पी का स्वयंवर।
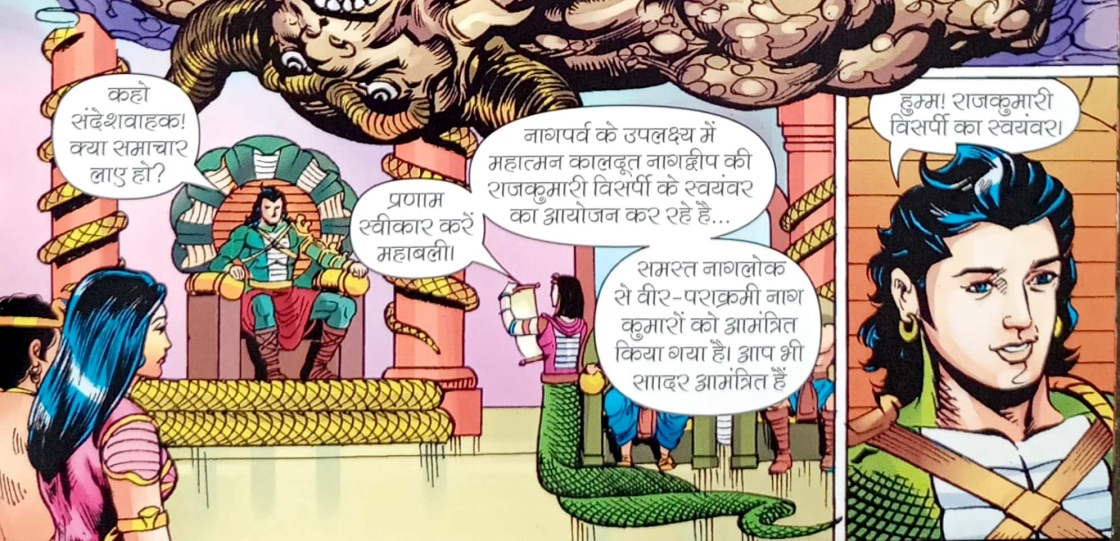
तुम हमारे परम मित्र ही नहीं हमारे विशेष सलाहकार भी हो, अंतहीन। सलाह दो हमें क्या करना चाहिए?
राजकुमारी के रूप यौवन और उनके सदगुणों की चर्चा सम्पूर्ण नागलोक में है महाबली और नागलोक में आपके समान कोई दूसरा पराक्रमी नहीं जो कुमारी विसर्पी के योग्य हो, इसमें कोई शक नहीं... आपको इस स्वयंवर में अवश्य सम्मिलित होना चाहिए।
"अंतहीन यानी मैं इकलौता ऐसा मनुष्य था जो नागलोक में रहता था।"
अंतहीन! यानी तुम मेरे पूर्वजन्म के मित्र और सलाहकार थे!
लेकिन नागलोक में मानवों का प्रवेश निषेध था फिर तुम वहाँ कैसे आए?
बताऊँगा! समय आने पर वह भी बताऊँगा।
फिलहाल आगे की कहानी सुनो।
"नागपर्व। इच्छाधारी नागों का सबसे पवित्र महोत्सव जो पूरे एक माह चलता था। इस बार इसका आयोजन नागलोक के नागद्वीप नामक स्थान पर किया जा रहा था।
"नागद्वीप का नेतृत्व था त्रिकाल नागयोद्धा महात्मन कालदूत के हाथों में... कहते हैं कालदूत को युद्ध में देवता भी पराजित नहीं कर सकते थे। संसार में कालदूत इकलौते ऐसे प्राणी थे जिन्होंने जीवन में कभी पराजय का मुँह ना देखा था।"
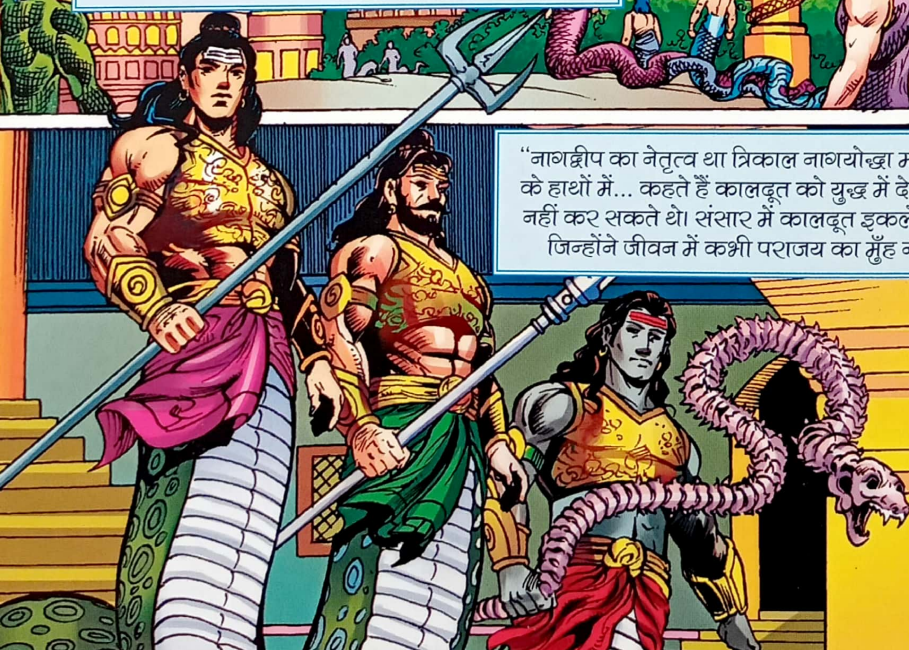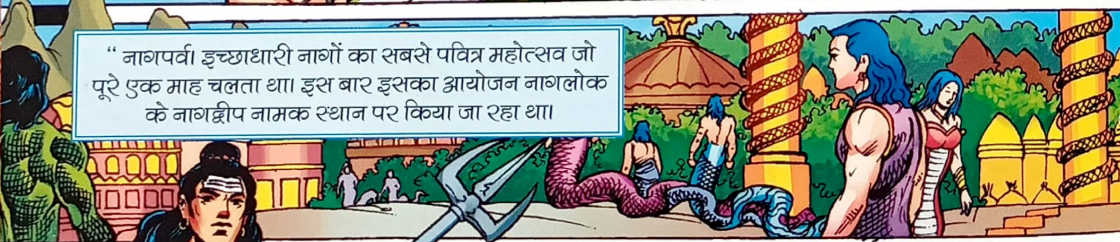
"नागलोक के कोने-कोने से बड़े-बड़े शूरवीर स्वयंवर के लिए नागद्वीप पहुँच रहे थे जिनका स्वागत कालदूत स्वयं कर रहे थे।"
पधारिए लंगारा जाति सम्राट लंगूरा।
"परंतु सभी वीर-पराक्रमी योद्धाओं की सांसें और नजरें तो जैसे सिर्फ राजकुमारी विसर्पी की एक झलक पाने को थमी हुई थी..."
मैंने तो सुना है देवराज स्वयं इस स्वयंवर में आने को ललायित थे, परंतु बेचारे नाग ना थे सो नागलोक की सीमा से ही खदेड़ दिए गए।
सुना है तीनों लोकों में विसर्पी के समान रूप सौंदर्य नहीं।
"राजकुमारी विसर्पी के बारे में जितनी भी बातें कही जाती थीं उनमें कोई अतिशयोक्ति ना थी।"
अद्भुत! अप्रतिम! यकीन नहीं होता।
उफ्फ! ऐसा रूप सौंदर्य!
"पूरे सभागार की नजरें राजकुमारी विसर्पी पर थीं और राजकुमारी विसर्पी की नजरें सिर्फ राजनाग पर।"

"प्रथम दृष्टि का प्रेम शायद इसे ही कहते हैं... दोनों की नजरें यूँ एक-दूसरे से उलझ गयीं जैसे उनके अलावा दूसरा वहाँ कोई नहीं था।"
"उनकी तंत्रा कालदूत की गरजदार आवाज से भंग हुई।"
सम्पूर्ण नागलोक के सर्वश्रेष्ठ नागवीरों का मैं नागद्वीप प्रतिनिधि कालदूत स्वागत करता हूँ।
आपके सामने जो शिलाखंड है उसमें गड़ा हुआ त्रिशूल कोई मामूली त्रिशूल नहीं स्वयं महादेव भगवान शिव का अस्त्र है।
इस स्वयंवर में जो कोई महापराक्रमी इस त्रिशूल को शिलाखंड से निकालेगा राजकुमारी विसर्पी उसके गले में ही वरमाला डालेंगी।
यह त्रिशूल तो मैं ही निकालूँगा।
मैंने बड़े-बड़े पर्वत अपनी पूँछ के एक वार से कंकर कर दिए हैं, त्रिशूल मैं निकालूँगा।
"प्रेम को पुरुषार्थ पर अटूट विश्वास था।"
कोई कुछ भी बोले, मुझे विश्वास है राजनाग कि यह त्रिशूल तुम ही निकालोगे।
तुम्हारी नजरों में जो विश्वास है उसे मैं मिथ्या सिद्ध नहीं होने दूँगा विसर्पी।
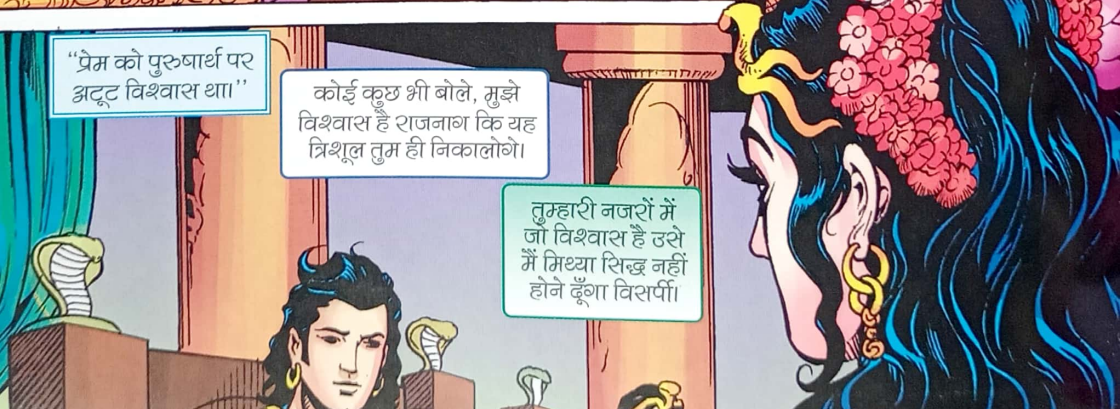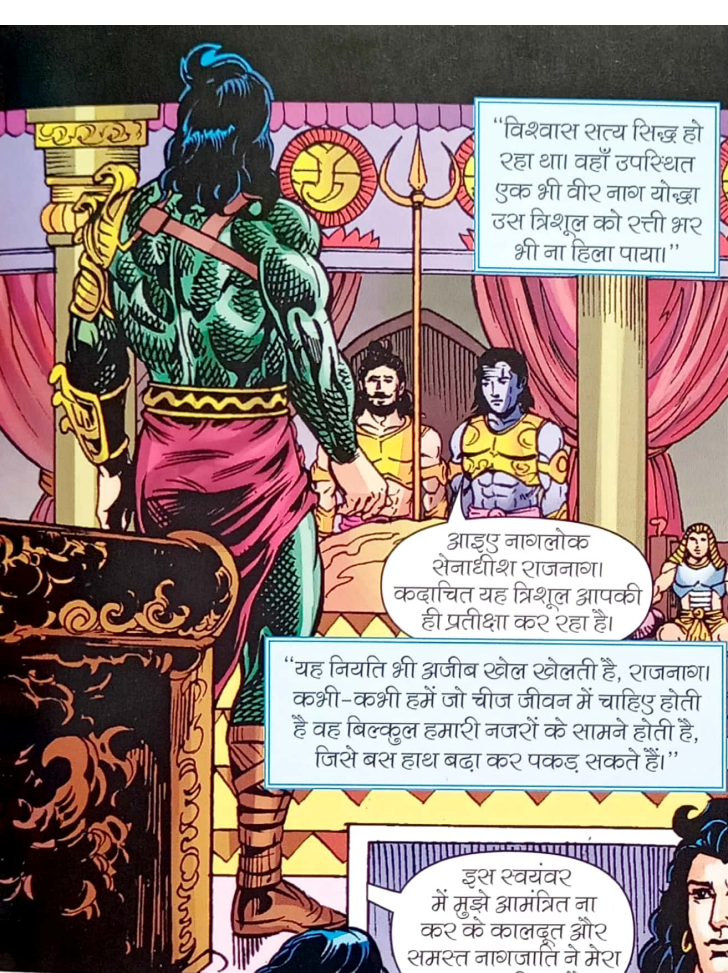
"विश्वास सत्य सिद्ध हो रहा था। वहाँ उपस्थित एक भी वीर नाग योद्धा उस त्रिशूल को रत्ती भर भी ना हिला पाया।"
आइए नागलोक सेनाधीश राजनाग। कदाचित यह त्रिशूल आपकी ही प्रतीक्षा कर रहा है।
"यह नियति भी अजीब खेल खेलती है, राजनाग। कभी-कभी हमें जो चीज जीवन में चाहिए होती है वह बिल्कुल हमारी नजरों के सामने होती है, जिसे बस हाथ बढ़ा कर पकड़ सकते हैं।"
"लेकिन हाथ बढ़ाने तक उस चीज से फासले यूँ बढ़ जाते हैं जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते।"
ठहरो!
इस स्वयंवर में मुझे आमंत्रित ना कर के कालदूत और समस्त नागजाति ने मेरा अपमान किया है।
मैं समस्त इच्छाधारी नागों में सर्वश्रेष्ठ हूँ...
...और स्वयंवर जीतने का अधिकार उसी का है जो सर्वश्रेष्ठ हो। यह बात मैं अभी इसी वक्त इस भरी सभा में सिद्ध कर दूँगा।

"कभी-कभी नियति ऐसा खेल खेलती है जो प्रेम मिलन के नागपर्व को एक झटके में नरक-नियति में बदल देता है।"
कड़ड़ड़ाम
..महादेव बाबा भोलेनाथ के इस त्रिशूल को शिलाखंड से निकाल कर!!
!!!
नहीं!
द्वितीय खण्ड समाप्त
गाथा जारी है
आरण्यक पर्व
में
क्रमशः

पूर्णमासी की वह सबसे लम्बी रात, जब शापित अरण्य का आरण्यक जीवित होता है और सुनाता है रक्त से लिखी गयी प्रेम की एक अनसुनी दास्तान। जो स्याह रात्रि के मस्तक पर रक्तिम तिलक कर के आरम्भ करती है...
आरण्यक पर्व
HEMANT
JADUN
MK
नरकनाशक नागराज
नाग ग्रंथ
श्रृंखला खण्ड-3
राज कॉमिक्स
By संजय गुप्ता
राज कॉमिक्स बाय संजय गुप्ता में नागग्रंथ का तृतीय अध्याय ला रहा है प्रेम और पागलपन की वह रक्तिम गाथा जो नरक नाशक नागराज के जीवन में निर्णायक मोड़ लाएगी
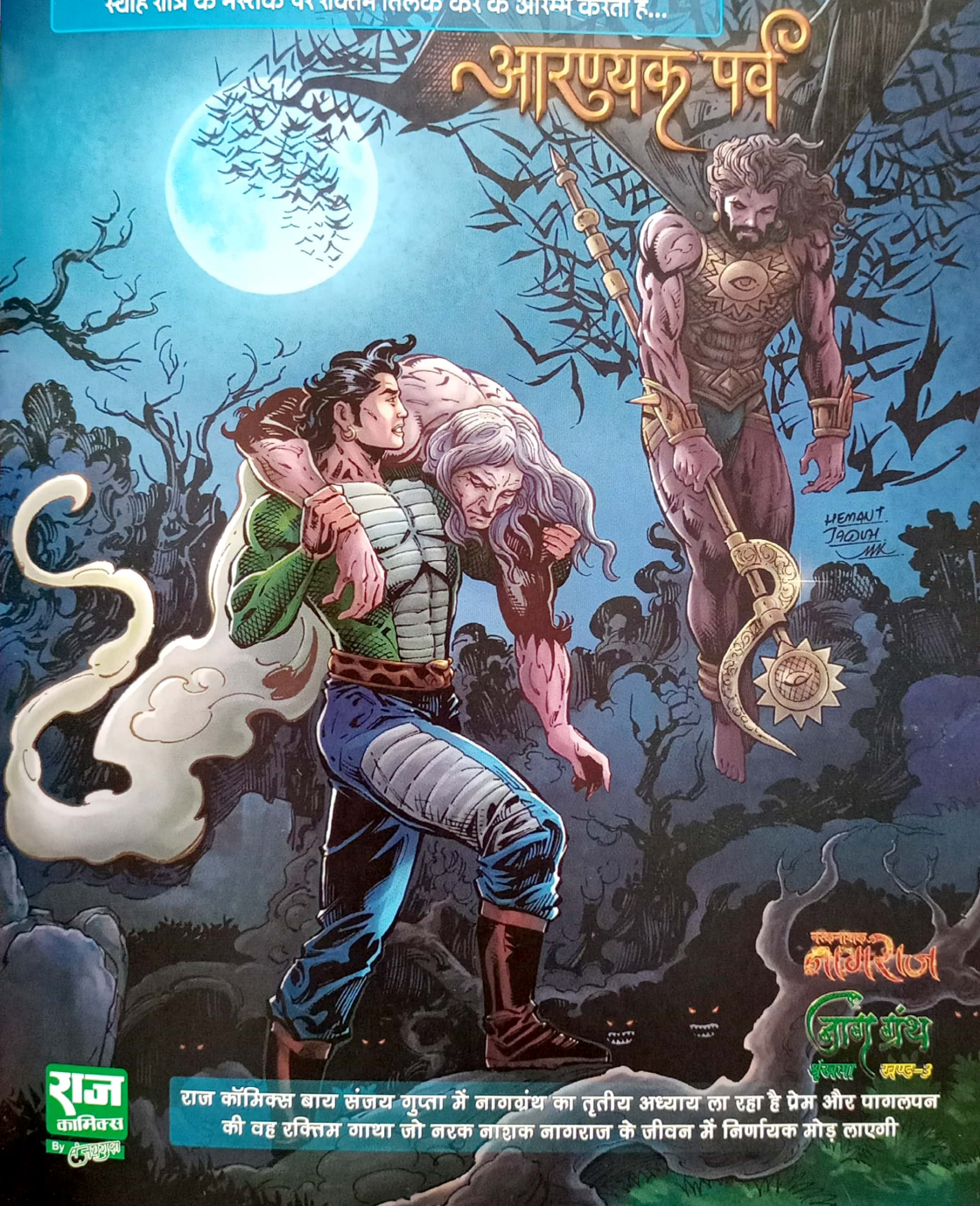
हांकने में ना कोबी कम है, ना डोगा। अब गवाही ही तय करेगी कि...
कौन बड़ा झापड़बाज
राज कॉमिक्स
By
राज कॉमिक्स बाय संजय गुप्ता पेश करते है भोलेभाले शैतान सुपर किड्स का झन्नाटेदार कॉमिक्स

राजनगर को ज़रूरत है पुनर्जन्म की, लेकिन पुनर्जन्म से पहले राजनगर
को मरना होगा, और राजनगर मरेगा सुपर कमांडो ध्रुव के साथ।
राजनगर बनेगा अपने ही रखवालों की चिता और बनेगा इस भयावह घटना का...
ग्राउंड ज़ीरो
श्रृंखला भाग-2
सुपर कमांडो ध्रुव
राज कॉमिक्स By संजय गुप्ता
राज कॉमिक्स बाय संजय गुप्ता में सुपर कमांडो ध्रुव का एक एक्शनपैक्ड कॉमिक्स

राज कॉमिक्स बाय संजय गुप्ता प्रस्तुत करते हैं अब तक प्रकाशित और प्रकाशाधीन कॉमिक्स

- ☑ आदिपर्व (नरक नाशक नागराज)
- ☑ नागप्रलय (नागराज और तौसी)
- ☑ ट्रैप (सुपर कमांडो ध्रुव)
- ☑ दोषपूर्ण (भेड़िया)
- ☑ कचरा पेटी (डोगा)
- ☑ किसने झापड़ मारा ध्रुव को (राज किड्स युनिवर्स)
- ☑ आबूरा का तिलिस्म (अश्वसम्राट बांकेलाल भाग-1)
- ☑ मेरी सोनू (डोगा)
- ☑ नागपर्व (नरक नाशक नागराज)
- ☑ आधिपत्य (भेड़िया)
- ○ प्रलय का देवता (नागराज और तौसी)
- ○ ग्राउंड जीरो (सुपर कमांडो ध्रुव)
- ○ कौन बड़ा झापड़बाज (राज किड्स युनिवर्स)
- ○ तरु तिलिस्म (अश्वसम्राट बांकेलाल भाग-2)
- ○ मृत्युरथी (भोकाल)
- ○ बलिदान तुम्हारा (डोगा)
- ○ अरण्यकपर्व (नरक नाशक नागराज)
- ○ रणभेरी (भेड़िया)
- ○ मैंने मारा ध्रुव को - ए डिफ्रेंट टेक (संभावित नाम)
- ○ शेर का बच्चा-ए डिफ्रेंट टेक (डोगा) (संभावित नाम)
- ○ नरक नाशक नागराज और शो-स्टॉपर ध्रुव
- ○ रक्तिम कथाएं (थ्रिल हॉरर सस्पेंस)
- ○ हार्ट ऑफ गोल्ड (गोल्ड हार्ट)
- ○ हऊऊ रिटर्न्स (थ्रिल हॉरर सस्पेंस)
- ○ एक्स चाईल्ड (एक्स सीरीज)
- ○ गेम ऑफ डेथ (नागराज)

विश्वआतंकवाद के खात्मे के सफर आरम्भ करते ही विश्वरक्षक नागराज जा टकराया मानव जाति के सबसे बड़े दुश्मन इच्छाधारी सर्पसम्राट तौसी से।
इच्छाधारी नागमणि प्राप्त करने के लिए रचे गए षड्यंत्र में नाग व सर्पशक्तियों के भीषण टकराव की वो भूली हुई हैरतअंगेज दास्तान जिसे मानवता की भलाई के लिए इतिहास के पन्नों से मिटा दिया गया आज फिर दुनिया के सामने खोली जा रही है।
दो महाप्रलयंकारी इच्छाधारी शक्तियों का भीषण संग्राम जिनमें कोई एक ही कहलाएगा
प्रलय का देवता
राज कॉमिक्स
समापन अंक
राज कॉमिक्स में नागसम्राट नागराज और सर्पसम्राट इच्छाधारी तौसी का प्रलयंकारी कॉमिक्स

मूल्य- ₹ 500/-
COMICS
ISBN 978-93-5468-235-3
9 789354 682353
SPCL-RCSG-10-H
राज
कॉमिक्स
By
www.rajcomicsuniverse.com